भोजपुरी अनुसंधान संस्थान, अनाईठ, आरा, भोजपुर बिहार 802301

नेह भरल गोदी के पावल, ई हमार भासा भोजपुरी।
फइलाइब हम देस-देस में, जइसे मधुरगंध कस्तुरी।।

दोहा

रवोंइया

अंक

भोजपुरी अनुसंधान संस्थान, अनाईठ,
आरा, भोजपुर (बिहार) के "दुमाही"

भोजपुरी पत्रिका

अंक-9-10 "जोइंआंक" जनवरी – अप्रील 2002

राउर चिट्ठी मिलल

• 'खोंइछा' अंक 7-8 मिलल। एक सुरकिये सब पढ़ गइलीं। ई नतीजा पर पहुँचलीं कि पत्रिका पत्रिका न बडुए, विटामिन के टिकिया बडुए। सुई के नोक बराबर जगहा में भी पढ़े लायक चीज देबे के कोसिस। संपादकीय संपादक के कालिक चेतना के छोतक बा। डॉ० गदाधर सिंह के धारावाहिक सोध लेख 'शाहाबाद के दिवंगत भोजपुरी रचनाकार' जानकारी बढ़ावे वाला बा। कांटक जी के कलम में गजब के ताकत बा। पाण्डेय कपिल जी के दोहा बहुत चोटगर बा। कृष्णानन्द 'कृष्ण' के गजल संवेदना के आँसू तहसोलत बिया। डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा के लोककथा 'किसमत के लेख' किसमत के बात के लोहा मनवावत बिया-'विधि के इच्छा सर्वत्र अटल' (निरला)। बरमेश्वर सिंह के विचार परक लघु निबंध 'भोजपुरी कविता के त्रिकोन' लेखक के गहिर अध्ययन के बतलावत बा। 'इंसाफ' लघुकथा कइसे कहल जाई ? एह में कहानी के विस्तार बा। अगिला अंक दोहा पर बिसेसांक होई, ई संपादक महोदय के सामयिक सूझ के नतीजे कहल जाई। 'खोंइछा' के मांसल, गुदगर, उपयोगी रूप देख के मन अगरा रहल बा।

डॉ० स्वर्णकिरण

संपादक - 'नालंदा दर्पण' , सोहसराय, नालंदा (बिहार), पिन - 803118

• 'खोंइछा' के अंक 7, 8 मिलल। कांटक जी के कुटुकी के यक्ष सवाल महज मजाक नइखे। 'भोजपुरी कविता के त्रिकोन' पर हम का कहीं ? छींटाकसी आ मुँहफुलउवल त बौद्धिक प्रदूसन ह। 'कविता' त कविता ह, उ चाहे कवनो कोना के होखे। 'कविता' में 'कविता' होखे के चाहीं, बस इहे सर्त ह कविता के। -----डॉ० निर्भीक जी आ डॉ० गदाधर सिंह जी के सोधपूर्न आलेख ज्ञानवर्धक आ संग्रह करे जोग बा। ---लोककथा पढ़ला प बचपन के इयाद ताजा हो जाता। --- डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव जी के रचना त रचना समीक्षो एतना रसगर होला कि पढ़ला से मन ना भरे। आचार्य पाण्डेय कपिल जी के दोहा में 'प्रेम मिलन' खातिर सतुआ-नून के अद्भुत प्रयोग पढ़ के --- आह मन गदगद हो गइल। 'आरोही' जी के दोहा, कृष्णानन्द कृष्ण जी के गजल, कमलेश जी के कविता आ कौशल जी के गीत इहो अच्छा लागल। बाकिर 'आग्नेय' जी के भोजपुरी गजल में 'आफताब','माहताब' हजम नइखे होत। राधामोहन पाल जी के बड़की पतोह के चाल-रहन देख के हमहूँ हरक गइल बानीं।--डॉ०स्वर्ण किरण जी जब ए उमिर में तरहथी पर गिरा के चाटब त हमनीं के का हाल होई? खैर, खोंइछा से भरपूर आनन्द मिलल। एकरा खातिर बधाई आ मंगल कामना।-मनोज कु०सिंह 'भावुक'

महाड़ रायगढ़ (महाराष्ट्र)- 402309

• 'खोंइछा' के अंक 7-8 मिलल। ई पत्रिका अंजुरी में गंगा के समान बाटे। एह में जे-जे देवता-देवी लोगन के गीत, गजल, कविता, कथा, व्यंग आदि छपल बा, ऊ सभे बधाई के पात्र बा। भोजपुरी भासा के उत्थान में 'खोंइछा' पत्रिका बड़ा नीमन काम क रहल बिया। 'खोंइछा' पढ़ि के मन हमार फुला गइल

बाबू राम सिंह 'कवि', भरोली,नवसारी (गुजरात)

•मंथर गति होखे भले, बढ़े बरोबर डेग।/ भाई भूलल बहन के, माँगे लागी नेग ।।
माँगे लागी नेग, बतावेले महंगाई।/ होकर के संत्रस्त, लुकाइल लोग- लुगाई।।
'आरोही' अस समय लख, होकर के संत्रस्त।/रूके-झुके ना 'खोंइछा', दुस्टग्रह कर ध्वस्त।।

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही', अमीरचन्द कोठी के दक्षिण, पकड़ी, आरा (भोजपुर)

रपट

उमेश कुमार पाठक 'रवि' के कविवर 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' मिलल-अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा के तरफ से ग्राम-कुसुरूपा, जिला-बक्सर(बिहार) निवासी, हिन्दी आ भोजपुरी के कवि,समीक्षक, स्वतंत्र पत्रकार उमेश कुमार पाठक 'रवि' के 26 जनवरी 2002 के 'कविवर मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' से सम्मानित कइल गइल। ई सम्मान उनुका के काव्यात्मक सेवा खातिर दीहल गइल।

एह अंक में के-के कहवाँ छपल बा? अपनहीं खोजि लीहीं

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकासक :

भोजपुरी अनुसंधान संस्थान,

मुहल्ला+डाकघर- अनाईठ (आरा) (प्रसाद पेपर वर्क्स के निकट)

जिला-भोजपुर (बिहार) 802301

संरक्षक

डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

डॉ० गदाधर सिंह

डॉ० अमर सिंह

डॉ० रमाशंकर आर्य

सम्पादक

डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा

सलाहकार

रामायण सिंह

खास सहयोगी

सुरेश कांटक

मुद्रक :

अजय कम्प्यूटर

पोस्टल कॉलोनी,आरा

सहयोग - चार रोपेया

सम्पादकीय

कहल जाला कि सोंचल काम बादसाहो से ना होखे। कुछ अइसने हो गइल हमरो संगे। हमहूँ एह अंक के पहिले वाला अंक में कहले रहीं-'एह अंक के बाद से उमेद करत बानीं कि अंक भगय से आ जाइल करी।' बाकिर इहो अंक रउआ सभे के सोभा परोसे में बहुते देर हो गइल। केकर दोस दीहीं?

जे अपना के, आपन सउँसे जिनिगी के भोजपुरी के सउँप दीहल, भोजपुरी खातिर मील के पत्थर के रूप में जे अबहिंयो भोजपुरी के सेवा में लागल बा, सरलता आ सादगी के मूरत, घमंड से कोसन फरका, अइसने व्यक्तित्व के धनी आचार्य पाण्डेय कपिल जी के हम दिल से आभारी बानीं कि उहाँ के 'खोंइछा' के दोहा बिसेसांक निकाले खातिर सलाह आ संगे-संगे पचहत्तर रचनाकार के दोहो दिहनीं। पचहत्तर रचनाकारन के दोहा के सम्पादन उहें के कइले बानीं, बाकी के हम।

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' आ 'कविता' के दोहा अंक में भोजपुरी दोहा पर अतना ना कहा गइल बा कि अब कुछ कहे खातिर बाँचत नइखे। रउआ खुदे पढ़ि के देखि लीहीं।

उमेद करत बानीं कि ई अंक रउआ सभे के पसंद आई आ आपन राय भेजे में रउआ सभे आठ आना के पोस्टकार्ड खरच करे में कंजूसी नहिंये करब।

जगह के कमी के चलते कुछ स्थायी स्तम्भ के अबकी बेर बरी क दीहल गइल बा। एकरा खातिर केहू के मन में दुराव के भाव ना आवे के चाहीं। —सम्पादक

पत्रिका में व्यक्त विचारन खातिर खुद रचनाकार जिम्मेवार बाड़न, सम्पादक भा प्रकासक ना।

www.bhojpurisahityangan.com

दोहा के लोहा

डॉ० शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव

दोहा हमन के देस के बहुत पुरान छन्द ह। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश सबमें खूब दोहा लिखाइल, खूब दोहा कहाइल। हिन्दी के भक्तिकाल में कबीर एही में साखी लिखनीं, धर्म, दर्सन के किताब पढ़ के ना, आँखिन से अपना साहिब के देख के। आ रहीम एही में जीवन के अइसन-अइसन मंत्र देहलीं, जे हजार-हजार पन्ना के वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण पढ़लो पर भी जल्दी हाथे ना लागित। ई दूनों के दोहन के पढ़ के कई पीढ़ी के ज्ञान मिलल, दिसा मिलल। राम चरितमानस में चौपाइन के बाद दोहा के सजा के गोस्वामी जी फेर से अपभ्रंश के कडवक-धत्ता सैली के नया जीवन दे दिहनीं।

धीरे-धीरे गीत-भजन के चलन बढ़ल, लेकिन फेनु रीतिकाल में बिहारी लाल जी सतसइया लिख के एकर अइसन उद्धार कई दिहनीं कि बस चौदह सौ पंक्ति लिख के उहाँ के, साहित्य के इतिहास में अजर-अमर हो गइनीं। बिहारी जी राधा-किसन के नाम पर सिंगार के अइसन धार बहवनीं कि विद्वान लोगन में आजतक ई विवाद चल रहल बा कि विद्यापति लेखा उनका के भक्त कवि मानल जाव कि निखालिस सिंगारी। बिहारी के नकल करे के ढेर लोग कोसिस कइल, बाकी दोसर कंहू बिहारी ना भइल।

रीतिकाल खतम भइल तब्बो दोहा मरल ना। खाली दोहे लिख के नाम कमावे वाला त सायद कंहू ना भइल, बाकी नामी-गरामी लोग जबे-तबे दोहा भा उलट के सोरठा भा फेरबदल के छप्पय लिखते रहन। धीरे-धीरे हिन्दी पाठकन आ गाँव-गँवई के रसिकन के बीच, कवनो कविता पढ़ल-सुनल जाय त सबके एक्के नाम से पुकारल जाय, 'दोहा' के नाम से। लोग एक-दोसरा के टोकस --"तोहरा मैथिली शरण जी के कवनो दोहा इयाद बा? "हम त राते पंतजी के दोहा कंठस्थ क गइनीं" "इयाद बा त दिनकर जी के कवनो दोहा सुनावऽ"। दोहा माने, कविता, कविता माने दोहा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी 'दोहा' के "हिंदी का लाडला छन्द" एनाहित ना कहले कहीं। हँ ई टोक बात बा कि छायावाद, प्रगतिवाद अउर प्रयोगवाद के जमाना में चौबीस मात्रा में छन्दोबद्ध दोहा करीब-करीब नाहिंए लिखाइल।

एने फेर दोहा के ओर नया ढंग से झुकाव हिन्दी में आ साथे-साथे भोजपुरियों में बढ़ रहल बा। समय के अभाव आज सभे के बा। हर चीज थोड़ही में चाहीं। बहुत मगजपच्ची करे के कंहू के टाइम नइखे। विज्ञान में सूत्र आ संकेत आ कला में लघुतम, गागर में सागर, सबका चाहीं। कथा में "लघुकथा" कविता में "हाइकु", चित्रकला में "मिनिएचर" चाहे न्यूनतम रेखा-प्रयोग, नाट्य में एकांकी आदि के प्रचलन एही कारन से बढ़त गइल। खान-पान, पहिरावा-ओढ़ावा, बात-बतकही, चिट्ठी-पत्री सबमें संक्षेप, छोटाई। हड़बड़ी, छटपटी, थोड़के में ढेर, ई युगधर्म बा, नीमन-बाउर जे कहीं। एही से दोहा के लिखनिहार आ पढ़निहार बढ़त जा रहल बाड़न।

हमरा ई पसन्द बा। एही से हमहूँ एने दोहा लिखे लगलीं। बाबूजी के संस्कार त रहबे करे। ऊहाँ के सस्टिपूर्त्ति के अवसर पर "मुरली दोहावली" छपवइले रहीं। हम त सस्टिपूर्त्ति के बादे दोहा लिखल सुरू कइनीं। हमरा बुझाला जे दोहा लिखे लायक बने में थोड़ा समय लागेला। जेकरा बहुत तरह के खूब गहिर अनुभव नइखे, ऊ का दोहा लिखी? दू लाइन में सबकुछ कह देहल, कवनो खेलवाड़ बा। हँ, अपवाद त सब चीजे के होला। अइसन-अइसन नौजवान प्रतिभावान बाड़न कि बिना बार पकले, उनका दीन-दुनिया के एतना अनुभव हो जाला कि ढेर लोग के सात जनम में ना होखे।

हम त दोहा के लोहा मान लेहनीं। हिन्दी में त ई सौ से जादे दोहा लिखा गइल, अब ई भोजपुरी दोहन के पढ़ के बताईं जा कि हम भोजपुरी में आउर दोहा लिखीं कि छोड़ दीं। रउआ मानीं ले दोहा के लोहा ?

अध्यक्ष, अंतर वि०वि०बोर्ड, पटना।

(१) अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

ईहे पूजा-पाठ हऽ, ईहे असली ज्ञान।
दया दीन पर जे करे, ऊहे सन्त महान ॥ 1 ॥
किकुरल केहू बा भले, चाहे चले उतान।
सभकर एके गति इहाँ, होई हे श्रीमान ॥ 2॥
मत करिहऽ तूँ भूलि के, सभका पर इतवार।
धेम बनाके सन्त के रूपे चंट-लबार ॥ 3॥

www.bhojpurisahityangan.com

जनता डूबे बाढ़ में, सूखा परे बिलाय।
बाबूजी हर हाल में, चानी काटें भाय ॥ 4॥
उनके ठोंकब ठीक से, जेहि बजाई गाल।
दुसमन पर भारी परब, हम भारत के लाल ॥ 5॥
करत चलऽ निज काम तूँ, होई बेड़ा पार।
फल के चिन्ता छोड़ि के, राम भरोसे यार ॥ 6॥

सागर पाली, बलिया (उ०प्र०)

(२) अक्षय कुमार पाण्डेय

कविता आँखिन पर जमल, साफ करले धूर।
देख सकऽ जे आदमी, केतना बा मजबूर॥7॥
रोटी मँगला पर गिले, रोटी कऽ अनुवाद।
भरल पेट कऽ खेल हऽ, संसद कऽ बकवाद॥8॥
संविधान अब रह गइल, जादू भरल फरेब।
लोकतंत्र कऽ लास पर, मूते औरंगजेब॥9॥
परछाईं गायब भइल, सूरज चढ़ल कपार।
मौसम लड़े विधायकी, लेके नया कटार॥10॥
'आजादी जहवाँ मुए, उहे देखाइब ठाँव।
राजा पैदल एक दिन, आवऽ हमरा गाँव॥ 11॥
चूल्हा चाकी आँखरी, घर आँगन दालान।
आज हारिया में जिये, नदी खेत खरिहान॥12॥
रहे स्वस्थ सब गाँव-घर, भइल बहुत बीमार।
जब से दिल्ली रखि गइल, रोटी पर तलवार॥13॥
के पोसी एके भला, ई बहिला सरकार।
नाक ओंठ कऽ बीच में, जइसे मोंछ हमार॥14॥
लागे सब बेअरथ अब, बने न मन कऽ बात।
दिन चमकावे आइना, करिखा थूके रात॥15॥
नाहीं मन गेहूँ भइल, नाहीं भइल गुलाब।
आई का एसे भला, अउरी समय खराब॥16॥

रेवतीपुर, गाजीपुर (उ०प्र०)

(३) अनिरूद्ध

दुर्जन सँग अब खैर ना, संगत चूना खैर।
सज्जन हरियर पान सँग, खल बेसाहे बैर॥17॥
छोट जीव के छोट ना, समुझीं करी विचार।
चिउँटी चढ़ि सिर गज हते, काटे मूस पहाड़॥18॥
माँझी माने जे रखे, जल-बयार पहचान।
उबिछे सरवत नाव-जल, सावधान तूफान ॥19॥
बिछुड़त मछरी देस-जल, तजे प्रान तत्काल।
बाँइसे रखीं देस से, अटल प्रेम हर काल॥ 20 ॥
धरम अरथ करतब करम, जन-हित जग कल्यान।
प्रेम सिखावे धरम सब, बसे प्रेम भगवान॥ 21॥

डोहीं, सारण, बिहार।

(४) अनिल ओझा 'नीरद'

गइल समय ई ना फिरी, मलत रहऽ तूँ हाथ।
अबो न बिगरल बात कुछ, चलऽ समय के साथ॥22॥
धर के हाथ प हाथ मति, खाली करऽ विचार।
करत जो कुछ रहब लगी, कबो दाव तोहार॥23॥
गाँव बसवलसि सहर के, सहर भुलाइल गाँव।
गाँव अबो हेरत कवन, डहर हेराइलु गाँव॥24॥
भाई-चारा मिटि गइल, गाँवों से सरकार।
होली के हुड़दंग में, चलि जाता तलवार॥ 25॥
एक किनारा सहर बा, एक किनारा गाँव।
दुविधा में बा आदमी, कहाँ धरे ऊ पाँव॥ 26॥
कुरसी हऽ माता-पिता, कुरसी दोस्त-महीम।
कुरसी दाता-देवता, एकर मोल असीम॥ 27॥
का ना कुरसी करि सके, का ना कुरसी देइ।
पहिले दे सम्मान-सुख, पीछे मति हरि लेइ॥28॥
नेताजी नाचल फिरसु, गावसु तूरसु तान।
कुर्सी खातिर कुल करम, करत रहसु श्रीमान॥ 29॥
जिनिगी रस-गागर हवे, जीहीं रस छलकाइ।
बूझी एह के बोझ जे, बेमउअति मरि जाइ॥ 30॥

सैयद सैली लेन, कोलकाता

(५) डॉ० अवधेश प्रधान

सगरो हल्ला बा मचल, हू-हू-हाहाकार।
मंत्री अफसर सेठ मिलि, गावत बा मल्हार॥ 31॥
कइसन गाँधी-भगत सिंह, कवन विवेकानन्द।
अब त कतहीं बम गुरू, कतहीं घपलानन्द ॥ 32॥
"नाहीं मिललऽ" "का करीं, बहुत रहे बफान"।
"ई कुल्हि त लगले रही, मीलल करऽ मितान"॥33॥
अमरीका का सांति में, जब एतना उतपात।
तब का होई जुद्ध में, इहो कहे के बात ॥ 34॥
दसो दिसा में घूमि के, जे धधकावल आग।
उहे बुतावे बा चलल, बान्हि सांति क पाग॥ 35॥

बी०एच०यू०, वाराणसी (उ०प्र०)

(६) डॉ० अशोक द्विवेदी

फूल भुलाइल गंध के, कवि के रूसल छंद।
राम बचावस कला के, आलोचक मतिमंद॥ 36॥
गाँधी आ अम्बेदकर, कइलन आपन काम।
ना जनलन एह देस के, आदत बनी लगाम॥ 37॥
आजादी के दिन गुनत, बीतल बरिस पचास।
राह भइल अबरू कठिन, उखड़ल जाता साँस॥ 38॥
रैय्यत पीर पघिल-पघिल, नैन-लोर बनि जाय।
बून-बून बटुराइ के, राज बहा ले जाय॥ 39॥

सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

(७) अक्षयवर कुमार 'आँसू'

चरस सुगर हिरोइन से, जेकर बनल नसीब।
ऊ का जानें देस के, का जानें तहजीब।।40।।
सुख-दुख दुनों भाई ह, जइसे नदी क तट।
जिनिगी ह संज फूल के, कबो हउवे मरघट।।41।।
जिनिगी ह एक तमासा, आगि पानी क खेल।
कबहूँ त टमटम हउवे, कबहूँ हउवे रेल।।42।।
रातें-दिन गोली चले, होंत खून हर ठाँव।
का बतलाई तोह के, कइसन आपन गाँव।।43।।
जाति-पाँति कें भेद से, बा सभें परेसान।
चाहे त हरिजन होखे, चाहे जाति महान।।44।।

मौलाबाग, आरा (भोजपुर)

(८) आनन्द सच्चिदूत

दिसाहीनता आ गइल, ना कुछ कइल जनाय।
रोज देखावत इ समय, नया-नया अन्याय।। 45।।
आकर्सन बहुते बढ़ें, घटल जाय क्रय-सक्ति।
भौतिक सुख संतप्ति में, मृगतृस्णा अनुरक्ति।। 46।।
सायद ही एहिजा मिले, अइसन कवनो लोग।
जेकरा अन्दर ना मिले, कवनो मानस रोग ।। 47।।
यंत्र करत सेवा मिले, 'आनन्द' कहत सखेद।
ए.सी. कूलर फैन फ्रिज, निकल न पावत स्वेद।।48।।
लागत भयद भविस्य बा, लुंज-पुंज सन्तान।
बिना स्वेद निकले कहाँ, कवनो जाति महान।। 49।।
गाँव के जनगर सब्द में, गाँव क मनगर बात।
सनगर गाँव सोभाव में, दमगर गीत गवात।।50।।

मिर्जापुर (उ०प्र०)

(९) उमेश कुमार पाठक 'रवि'

बिगड़ल बात बनाई दे, उहे ह वीर सपूत।
'रवि' जे काम बिगारि दे, अइसन मरे कपूत।।51।।
नेह न नयना में बसल, 'रवि' भजन केहि काम।
ठेला ठेली नरक में, झूठा चारू धाम।।52।।
सुरा सुन्दरी से बँचल, ऊ ना हारी दाव।
रावन का दरबार में, भले रोप दे पाँव।।53।।
चीकन बाति बघारि 'रवि', लोग चलंलन चाल।
महाकाल जेकर गुरू, बुरा करी का काल ?54।।
खोजत-खोजत खपि गइल, सउँसे जिनिगीखाम।
बउराहा 'रवि' होंगइल, दूर दाम, आराम।।55।।

कुसुरूपा, सरंजा, बौसा (बक्सर)

(१०) (सुश्री) उमा वर्मा

दसा दसहरा के गजब, मेला भइल उदास।
महँगाई के बाप रे, धइलस बरम पिचास।। 56।।

राजेन्द्र पथ, सीवान (बिहार)

(११) कन्हैया पाण्डेय

मुखिया आन्हर हो गइल, बहिरा भइल कनून।
डेग-डेग प दंगा भइल, ठाँव-ठाँव पर खून।।57।।
स्वारथ में बा बिकि गइल, भइयों सगरे लोग।
का जाई एह देस से, भाँति-भाँति के रोग।।58।।
बा गरीब के नाँव पर, धनिका लूटत-खात।
जब गरीब ई ना रही, लउकी तब अवकात।।59।।
करमी जेही पा गइल, होखल गूलर-फूल।
नाम कइके लाख गो, जाला सगरे भूल।। 60।।
लूट मचल बा, लूटि लऽ , तोहरे ह ई देस।
पुरखा तोहर सरग से, भेजले बा सन्देस।। 61।।

हरपुर, बलिया (उ०प्र०)

(१२) कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'

काँची कइनी नवति बा, पाकी कइनी नाहिं।
लरिकाई में सुधरि जा, वृथा बुढ़ारी माहिं।। 62।।
हम-हम तुम-तुम करत में, जिनिगी गइल अनेर।
हरि-सुमिरन किछु ना भइल,अब का करें 'कुबेर।।63।।
जनमल-मरल न हाथ में, जाई कुछू न साथ।
कीरति-पुन्न कमाई लऽ, धरऽ हाथ जनि माथ।। 64।।
हम आपन दिहलीं बहुत, ऊ ना देहलें रंच।
दुनिया कतना गिरलि बा, सोंचत रहे सरपंच।। 65।।
सुघर सरीफा देखि के, मनवाँ भइल चकोर।
झूठ रहे ऊ, साँच ना, टप-टप चूअल लोर।। 66।।
हम जनलीं, हमरे हई, कई जनम के साथ।
साथ छुटल मझधार में, हम खजुआई माथ।। 67।।
जे 'कुबेर' के बा इहाँ, आके मिलो सबेर।
मेल खुली तब ना मिलबि, आइल होइ अनेर।। 68।।

भाटपाररानी, देवरिया (उ०प्र०)

(१३) कुमार विरल

डंडा में झंडा रहे, झंडा गइलें बिलाय।
डंडा डंडा से लड़े , पंडा सबे मुसकाय।। 69।।
सेंगरा पर ढोअत रहीं, बोझा बड़ी निठाह।
हम ताकत कबसे रहीं, कंहु बढ़ाओ बाँह।। 70।।
चीर-हरन सुनले रहीं, मनवाँ ना पतिआय।
दुरपतिया नंगा भइल, तब मिस वर्ल्ड कहाय।। 71।।
कवि कहाय का ललक में, बेअखरा बा जीव।
सबद चिबावत जे रहे, जरत रहे तब हीव।। 72।।
आँखिया में कीरी परल, आँखे दिहलन फोर।
अइसन करनी के भइल, जग में बहुते सोर।। 73।।
तातल धीकल त खउलल, जब उनकर तासीर।
अचके में लहके लगल, उनकर सब जागीर।। 74।।

नाड़ापुर, मुजफ्फरपुर (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

(१४) गौरी शंकर मिश्र 'मुक्त'

अँधियारी के जोर से, काँपत बा उजियार।
कइसे कंवट बा छिपल, कइसे जाई पार।।75।।
आजादी के पाइ के, मनई बा लाचार।
ठग-चोरन के राज में, सगरे हाहाकार।। 76।।
कउवनन के जमात में, कहवाँ हंस के वास।
अलकतरा के मेल से, करिया भइल कपास।।77।।
करूना-दया भगाइ के, हो जाला सयतान।
मनई-मनई ना रहे, हो जाला हयवान।।78।।
पइसा नइखे टेट में, लइकी घरे सयान।
हथजोरी नाहीं सुने, समधी बा सयतान।।79।।
पढ़ियो लिखि के नौमनो, लइका बा बेकार।
घूस के बल प नौकरी, हाँके धूँआधार।।80।।
अंगरेजी के जोर से,हिन्दी बिया लाचार।
पछिम के सकरचाल से, भारत भइल भिखार।।8।।
ज्वालामुखि हो रहलि बा, सस्त्रन के गोदाम।
जयचंदन मीर जाफरन, के हउवे ई काम।।82।।
मुदई सीमा पर चढ़ल, हो जा तूँ तइयार।
खाल ओढ़ि के बाघ के, फउके धुरूत सियार।।83।।
धरती माई के सपथ, सब लेलें हथियार।
त्राहि-त्राहि मुदई करे, खाई भयंकर मार।।84।।

रेवतीपुर, गाजीपुर (उ०प्र०)

(१५) गंगा प्रसाद 'अरुण'

रैन-दिवस बिछिलत रहे, नयनन से अभिसेक।
कइसे ना बहि जाय जी, काँच संतु अस टेक।। 85।।
जब तक थाना ना रहे, सांत लोग, खुसहाल।
रमन-चमन अब बा कहाँ,नित-नित नया बवाल।। 86।।
भासा-भाव-सुछंद ना , ना कुछ ललित विचार।
हम बड़का लेखक बनीं , लोग करी दरबार।। 87।।
आवे-जाये ना कुछो, कर कोंटिन उतजोग।
हम बड़का वैयाकरण, कुछुओ समझो लोग।। 88।।
ना गुन-गन गगना भइल, ना कुछ छंद-विचार।
ठोंकीं आपन पीठ हम, बड़का रचनाकार।। 89।।

टेल्को कॉलोनी, जमशेदपुर (झारखंड)

(१६) (श्रीमती) गरिमा बन्धु

हड़बड़-हड़बड़ जो करब, गड़बड़ होई काम।
सोच-समझ के जो चलब,होखब सफल सकाम।।90।।
अपना से राखल करीं, सबसे मीठा भाव।
भलहीं कतहीं से मिले, रउआ निठुर दुराव।। 91।।

एर्नाकुलम, केरल

(१७) प्रो० गुरुचरण सिंह

जात-पाँत मजहब बनल, राजनीति के मंत्र
आपस में जनता लड़ी, तबे नु बाँची तंत्र।। 93।।
मंदिर मस्जिद चर्च में, बनल रही जब भेद।
काजर के ई कोठरी, लउको तबे सफेद ।। 94।।
रोज कहे अलगा करऽ, धर्म अउर रजनीति।
ऊहे धर्म प्रचार में, लागल कइसन रीति।। 95।।
मानवता के आड़ में, पलें हजारों धर्म।
राष्ट्र-प्रेम ना बुझ सकी, ऊ का जानी मर्म।। 96।।
बेमतलब अब हो गइल, गीता के उपदेस।
द्रोपदी के बजार में, रोज खिंचाता केस ।। 97।।
जद्यपि एह संसार में, मतलब के ब्योहार।
बाकिर सउँसे सृस्टि में, प्रेम-तत्व ह सार।। 98।।

सिविल लाइन्स, सासाराम (बिहार)

(१८) चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही'

पनघट, घूँघट, सादगी, बर-पीपर के छाँव।
के चोरा के ले गइल, काटे धावे गाँव।। 99।।
सतपथ काँटा देख के, काहे के फरियाद।
बाँचल त सच्चाई रही, महाविनासो बाद।। 100।।
समय भइल प्रतिकूल जे, लंगड़ो मारे दाव।
ज्ञानी जन दिल के करे, 'आरोही' दरियाव।।101।।
सरहद खातिर आदमी , करत रहेला जंग।
मरत काल कुछ जात ना, 'आरोही' के संग।।102।।
साँझ समइया नीम के, फुनगी ऊपर धाम।
बइठल हरियर पात पर, सुरज करत आराम।।103।।
सास-बहु के बीच में, ननदी बोवे आग।
मार बाप के नौकरी, बेटा गावे फाग।। 104।।
भउजाइ माहुर-मधुर, बन-बइरी के काँट।
बहिन न चाहे बीर के, ममता बंदर बाँट।। 105।।
मंदिर से चोरी गइल, बिगत रात भगवान।
'आरोही' महफूज बा, ना कतहूँ इंसान।। 106।।
सब्जी मूली के मिले, फूलगोभी के बिल।
रहनूमा रहबर भइल, अफसर लोग कातिल।। 107।।
थूकें सूरज-चान पर, अपने ऊपर आय।
दवा-डाक्टर का करी, जहर हमेसा खाय। 108।।
लागल रहे मरीज में, अपना पर बिस्वास।
'आरोही' आसान तब, दरदन के उद्नास।।109।।

नोनार, पीरो (भोजपुर)

(१९) बन्धु (डॉ०) जनार्दन राय

बाधा 'बंधु' हमार हे, आतंकी अवतार।
कर में कट्टा लेइ के, हरहु पीर बरियार।।110।।
पी लऽ छकि के सरम रस, लऽ चढ़ाइ भरपूर।
नाचऽ बीच बजार में, उइसे नतंग नूर ।। 111।।

www.bhojpurisahityangan.com

कहन कही कहकाह से, सुनि लऽ बात सुजान।
अल्लाह का दरबार में, सबहीं लोग समान।। 91।।
का मुल्ला, का पादरी, का हमरा दरकार।
काबा का दरबंम में, पहुँचे पहुँचनहार ।। 92।।
सुन सुत सन्त जमीर के, ओसो फेन समान।
धरती के सब लोग सब, सबही जीव समान।। 93।।

काशीपुर,बलिया (उ०प्र०)

(२०) जवाहर लाल 'बेकस'

देश बँटा के बन गइल, जब से पाकिस्तान।
निबटत झंझट से रहल, तब से हिन्दुस्तान।। 94।।
भारत झेलत रहल बा, दहसतगर्दी-दंस।
अपने कुल-खन्दान के,कतल करत बा कंस।। 95।।

नोखा , रोहतास (बिहार)

(२१) जीतेन्द्र वर्मा

पंडी जी के पूत के, पीहीं पाँव पखार।
बेटा के बुद्धि भले, होखे घोर गँवार।। 96।।
जात-धरम के नाँव पर, मिलल मान-अपमान।
जहवाँ जे जादे रहे, बनल उहे परधान।। 97।।
आज के बोली काल्ह ह, काल्ह के बोली आज।
रउरे बोलल साँच ह, रउरे बाटे राज।। 98।।
बनल रहो सद्भावना, अच्छा रहे समाज।
जात-पाँत के राख के, आई गद्दीं सुराज।।99।।
चेला हई कबीर के, सपना आइल रात।
पोथी रख मूरत धरब, लगले होत परात।। 100।।

राजेन्द्र पथ, सीवान (बिहार)

(२२) तंग इनायतपुरी

सीमा पर बानी खड़ा, तनले हम बन्दूक।
जादूगर घुसपैठिया, तबहूँ जाता ढूक ।। 101।।
संविधान लेले खड़ा , बाड़े चुप्प उदास।
अगड़ा-पिछड़ा जात में, बाबा राज बँटास।। 102।।
भिक्षा मँगले ना मिली, मिली ना दिहले नोट।
कट्टा से, बन्दूक से, माँगल जाता वोट ।। 103।।
दिल्ली में दुस्मन बदे, समझौता के भोज।
ए०के०सैंतालिस चले, काश्मीर में रोज।। 104।।
अबकी बा मोका मिलल, चलीं लगाई जोर।
मचल तहलका बाप रे,भइल सिपहिया चोर।। 105।।
गाँधी जी अब का करसु उनका कहाँ सँवास।
रुपया लेहलस डाकपर, चिट्ठी लिहले जास।। 106।।

कागजी मुहल्ला, सीवान (बिहार)

(२३) तेजनारायण सिंह 'तरुण'

रोख समय के पकड़ि के, मनवाँ बदलत जाय।
खन हरिया, खन भूअग, गिरगिट-जस बदलाय।।107।।
देखि पात के पीअरा, तर-तरु देह छोड़ाय ।
अइसे दुर्दिन के परे, कंउ न पूछे भाय।। 108।।
मोल गवाँ के आदमी, भइले कउड़ी तीन ।
घर आनत बा आदमी, जइसे सउदा कीन।। 109।।
कंउ तिजोरी में भरे, पान-पत्र कंउ खाय।
धूम मचल बा लूट के, जतना कर में आय।। 110।।
भइल कुरुसिया आजु के, रिस्वत के परयाय।
काम करे ना दाम बिनु, बाकी के टरकाय।। 111।।

पंडुरा, रामपुर(भोजपुर)

(२४) (डॉ०) तैयब हुसैन पीड़ित

ई आन्हर के राज बा, अन्हरे बा सरकार।
इहाँ जे बेंची आह ना, चउपट कारोबार।।112।।
अब न बनारस के सुबह, अउर अवध के साम।
दूनो जगहा कर रहल, बा बादर आराम।।113।।
पहिले धनिक-गरीब फेर, बड़ आ छोट समाज।
राजनीति के कोढ़ अब, जातवाद के खाज।।114।।
बुलबुल पासे बघनखा, कोइल पास गुलेल।
हर डाली पर बइठ के, उल्लू करे कुलेल।।115।।
सातो रंग बिखर गइल, इन्द्रधनुस के आज।
एह सीमा तक हो गइल, ई बदरंग समाज।।116।।

जेड०ए०इस्लामिया कॉलेज,सीवान

(२५) दक्ष निरंजन शम्भु

गाँधी जी के देस में, हत्या लूट-खसोट।
इहे समय के माँग बा, ई दिलवाई वोट।।117।।
मुखिया आ सरपंच के, जब से भइल चुनाव।
आपस में झगड़ा बढ़ल, रोजे होय तनाव।।118।।
का लेके अइलऽ इहाँ, आपन कथी तहार।
सब कुछ इहई छोड़ के, जइबऽ हाथ पसार।।119।।
'शम्भू' एह संसार में, कतनो बाँटब प्यार।
अन्त समय निकली सभे, बस मतलब के यार।।120।।
'शम्भू' अपना गाँव में, कतना बढ़ल प्रपंच।
पार्टी ऊहे बन गइल, जे झगड़ा के पंच।।121।।
गाँधी जी के देस ई, अजब लिहलस मोड़।
सत्य-अहिंसा मर गइल, अस्त्र-सस्त्र के होड़।।122।।

महमूद चौक, छपरा (बिहार)

(२६) दयाशंकर तिवारी

छन-भर में छितरा गइल, सपना कऽ सुख-भोग।
छूरी मारें पीठि में, छिप के आपन लोग।।123।।
जुफ्ती से कुरसी मिले, कुरसी से पहिचान।
जहिया ले कुरसी रहे, तहिये ले सनमान।।124।।
आँखि कान ठेहुन करे, धरम-करम के काम।
धरम देत सुभान हऽ, करम बढ़ावे नाम।।125।।

www.bhojpurisahityangan.com

उड़े यदं असमान में, करे पतंगा सोर।
उहे खेलाई खेल ई, जेकरे हाथ डोर।।।26।।
मन माफिक पतवार से, तेज चलेले नाव।
भँवर परे मझधार में, चले न कवनो दाव।।।27।।
सूधर सूरति बनलि बा, छांट कहीं बड़वार।
मूरति सिरजनहार के, हाथे कऽ खेलवार।।।28।।
गहिरे पानी में पलें, सीप समुन्दर बीच।
डुबले पर मोती मिले, मिले किनारे कीच।।।29।।
रोटी क महिमा बहुत, रोटी गुन क खान।
भूखे पेटे पीठि पर, ढोवेला इन्सान।।।30।।
मोसकिल मनई के भइल, समुझल आज मिजाज।
देखले में जे हीत बा, उहे गिरावत गाज।।।31।।
असली नकली के भइल, बिन मानक क मोल।
असली असमाने चढ़ल, नकली बा अनमोल।।।32।।
जनि इतरइहऽ जानि के, सुख-सुविधा क बाति।
सुखवा क दिन थोर ह, दुखवा क बड़ राति।।।33।।
दिल दिमाग के बीच के, रिस्ता बड़ा अजीब।
जे दिमाग के तेज बा, दिल के बहुत गरीब।।।34।।

भोठी, मऊ (उ०प्र०)

(२७) डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा

चढ़ते माह असाढ़ के, देखि घटा घनघोर।
बिरही तरसे बिरह से, मोर मचावे सोर।।।35।।
मोह-माया तजि के तू, तेयाग द घर-बार।
सभ धन इहें रहि जाई, जइबऽ हाथ पसार।।।36।।
मंदिर-महजिद लफड़ा में, फंसल देस के लोग।
नेतन से ई ना छुटी, अइसन बाटे रोग।।।37।।
नारी के नारी जने, नारिये बंस बढ़ाय।
नारी के मारे बदे, नारी रचे उपाय।।।38।।
पइसा-पइसा सभ रटे, पइसा तजे न कोय।
जे मनई पइसा तजे, गम काहे के होय।।।39।।
दहेज के बलि बेदी प, गइली नारी झूलि।
गरीब अब छटपटइहन, दहेज भइल सूलि ।।।40।।
बबुआ-बबुआ पुकारत , मतारी गइली मरि ।
बेटा ना जे पुछले, मुँह फुलइली मेहरि ।।।41।।
अनका के देखि दुख में, चहकल करे संसार।
पड़ल जे अपना देहि प, ठोकन लगे कपार ।।।42।।
राज राम के चलि गइल, आइल रावन-राज।
ऊ मरइहें फोकट में, जे अब पहिनी ताज।।।43।।
जात-पांत में बंटि गइल, भारत अइसन देस।
बिलाई थोड़े दिन में, कुछ ना बाँची सेस।।।44।।
बी०ए०, एम०ए० पास त, भइल बेरोजगार ।
माथा प डिगरी चपकल, नाहीं चली कुदार।।।45।।
कुँआ खाई का बीचे, पड़ल इहाँ के लोग।
जान ना बांची कतहीं लाख करब उतजोग।।।46।।

अनाईठ,आरा (भोजपुर)

(२८) देव कुमार मिश्र 'अलमस्त'

(स्व० पं० व्रजभूषण मिश्र 'आक्रान्तजी के प्रति)

रहऽ धनिक दिल के बड़ा,कवि कुल के सम्राट।
नव रस के सागर रहऽ, हिमपति नियन बिराट।।।47।।
सिच्छक रहऽ सुयोग्य मुंह, रम चाटल संसार।
निस्कामी योगी व्रती, हनुमत नियन उदार।।।48।।
हितोपदेस उल्था करि, हिन्दी में रसदार।
लिखलऽ ग्रन्थ अनेक तू, सुरभासा के सार।।।49।।
आरन्य कम सुपत्र से, कइलऽ खूब प्रसार।
सुरभासा में सुर नया, दिहलऽ सुख के सार।।।50।।
तजि के गइलऽ स्वर्ग में, भेंटल भवन बिसाल।
पाय पात्र के तोह के, गुरुपति भइल निहाल।।।51।।

हंतमपुर, भोजपुर (बिहार)

(२९) दीपक गदाईपुरी

स्याम सखा बिनु खो गइल, वृन्दावन के ठाठ।
सोरह के वृसभानुजा, बिरहे भइली साठ।।।52।।
''खोंइछा'' में डालल गइल, हमरा खूब असीस।
रो-रो के भइलीं बिदा, ले के भारी टीस।।।53।।
भइया, समझल आन के, होला बड़ आसान।
दुसरा ले पहिले करऽ, खुद आपन पहिचान।।।54।।
सेज सवतिया हो गइल, सपना सवख-सिंगार।
एगो 'दीपक' के बिना, सारा जग अन्हियार।।।55।।

गदाईपुर, गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

(३०) दीपनारायण मिश्र

अँखिया बरिसे नेह जे, मेह झरी बन जाय।
पाती लीखत पीय के, लोरे देह नहाय।।।56।।
अँखिया करे सनेह जे, बिरले जाने कोय।
जे सुख अँखिया के मिले, से सुख सेज न सोय।।।57।।
कीचड़ से कीचड़ कबो, धोय सके ना कोय।
जब से मन गंगा बने, सभके डाले धोय।।।58।।
बचल रहेले लोग सभ, दुर्जन के पहिचान।
अलगे हरही गाय के, राखे लोग बथान।।।59।।
केकरा कुल में दोस ना, भइल ना केकरा रोग।
केकरा सुख हरदम रहल, केकरा परल ना सोग।।।60।।
नेता के पद पाइ के, तस्कर करे कमाल।
भले देस माटी मिले, अपने मालामाल।।।61।।

रेशम कोठी, वीरगंज (नेपाल)

(३१) (श्रीमती) दीप्ति

मन फुनगी पर खिल उठल, आस-हास के फूल।
भाव-किरिन सुख के उगल, मेट गइल हिय-सूल।।।62।।

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी में सभका मिले, अवसर एक-न-एक।
सजग सहज में फल चखे, गुतल माथा टेक ।।163।।
अवसर आइल गँवें से, दबले-दबले पाँव।
साँकल बजा रहल हवा, नीनें मातल गाँव।।164।।

बोरिंग रोड, पटना

(३२) देवसुन्दर पाण्डेय 'व्याकुल'

ना केहू आपन हवे, ना केहू ह गैर।
केकरा से दोस्ती करीं, आ केकरा से बैर।।165।।
गइल जवानी, ना रहल, अब तनिको ऊ जोम।
साँच सँकारे में लगे, काहे अतना खोम।।166।।

छोटकी डेल्हा, गया (बिहार)

(३३) (श्रीमती) नीभा श्रीवास्तव

बेटी के मन के सजी, माई लंबे टोह।
सास ननद के बीच में, सेतू बने पतोह।।167।।
भौजी चउका में फँसल, माई फटके धान।
दादी अपना खाट पर,बइठल पढ़े पुरान।।168।।
आसे पर दुनिया टिकल, बाड़ऽ का घबरात।
रात के पीछा दिन हवे, दिन के पीछा रात।।169।।
भरल-पुरल आँगन रहो, हँसत-खेलत परिवार।
सास ससुर देवर ननद, इहे ह ससुरार।।170।।
बड़का के आदर करीं, छोटको देव सुभाव।
मधुर बचन बोलल करीं, राखीं मीठ सुभाव।।171।।
दिल में बा दुनिया बसल, का घर का परदेस।
मन में सरधा बा अगर, गोबर बने गनेस।।172।।

कागजी मुहल्ला, सीवान (बिहार)

(३४) पारसनाथ प्रसाद 'भ्रमर'

मात्रा तेरह बिसम में, सम में ग्यारह जान।
'भ्रमर' बिसम बरजित जगत, कर दोहा के ज्ञान।।173।।
बरबादी त हो रहल, आबादी के सोर ।
कहत 'भ्रमर' रखवार जब, लूटत बनि के चोर।।174।।
घोंटाला आतंक से, भरल रहत अखबार।
के दोसी नइखे पता, खोजत बे सरकार।।175।।
दूधे के धोवल सभे, ना केहू में दोस ।
कहत 'भ्रमर' भगवान के, अब रहि गइल भरोस।।176।।
रोज डूबि पानी पियत, ना जइसे पकड़ात ।
अँटकत जब टेंगर गले, नीकन के छपटात।।177।।
जन सेवा सिर पर चढ़ल, जन सेवक भरमार।
कहत 'भ्रमर' जनहित बदे, कर कुरसी के मार।।178।।
मरद जनाना के रहल, बहुत दिनन तक राज।
कहत 'भ्रमर'अब देखि लीं, रखि किन्नर सिर ताज।।179।।
ना किन्नर का मेहरी, ना बा पूत भतार।
खलिसा आपन देह बा, नीक चली सरकार ।।180।।
हिमांचल परदेस नीक, अरूणांचल परदेस ।
उतरांचल त बनि गइल, हिंजड़ांचल बा सेस।।181।।
उहो बना के देखि लीं, पूरा हो जा साध।
हक मांगल जनतंत्र में, ना कवनो अपराध ।।182।।

शाहपुर पट्टी (भोजपुर)

(३५) पवन कुमार

मना सुख जब से मिलल, मंत्री भइलन भाय।
दीन-दुखी साथी-सगा, सबहीं गइल भुलाय।।183।।
झाड़-फूँक का फेर में, ओझा दे भरमाय।
जब अपना पर पड़ गइल, बैदा के घर जाय।।184।।
आसमान से झर रहल, अमरित जइसन प्रीत।
सूखल बगिया झुमि रहल, फुनुगी गावे गीत।।185।।
मुनवाँ मुनिया हो गइल, का होई दस-बीस।
अपरेसन करना लिहीं, कुफुत रही ना टीस।।186।।
रात-रात भर जाग के, रहलीं दिया जराय।
भोर पहर अँखिया झँपल, सब कुछ गइल लुटाय।।187।।
तार-तार लुगरी भइल, भइले बदन उघार।
कइसे झाँपीं भरम अब, जिनिगी भइल पहाड़।।188।।

धनही, पूर्वी चम्पारण (बिहार)

(३६) पाण्डेय आशुतोष

मकई के रोटी पकल, बनल खोंसारी साग।
गीत-गजल में दिन कटल, मन-भर तपनी आग।।189।।
ट्विन टावर जब से गिरल, जग में हाहाकार ।
दस हजार के मौत पर, मुस्लिम धर्म प्रचार।।190।।
आँधी उठल सजोर बा, अब पच्छिम के ओर।
आसामा के ध्वंस के, कहीं ओर ना छोर।।191।।
वादा के भरमार बा, झूठन के सत्कार।
संसद जलसा-घर भइल, साँच मरे हर बार।।192।।
देस बचल तप-त्याग से, पूज्य रहल उ लोग।
अब उनके वहुवंस सब, खालें छप्पन भोग।।193।।
गाँधी के गुन-गान बा जे.पी.के. बा जाप।
एह दूनू के नाम से, लगे न कवनो पाप।।194।।

मलकौली, पश्चिम चम्पारण

(३७) पाण्डेय कपिल

बिरही मन कबले कहे, आपन व्यथा अनन्त।
का कबहीं भी हो सकल, प्रेम कथा के अन्त।।195।।
जोड़त-तोड़त सब्द के, बान्हत अनगढ़ छन्द।
नीरस तुकबन्दी करे, यसप्रार्थी कवि मन्द।।196।।
अपना से लागल रहीं, अपने करीं भरोस।
अगर सफलता ना मिले, तबो मिली सन्तोस।।197।।

www.bhojpurisahityangan.com

आदर दीं सब धर्म के, तज मजहबी जुनून।
जाति-धर्म के नाम पर, मत होखे दीं खून।।198।।
आतंकी उन्माद पर, ना जो लगी लगाम ।
जोही एह आतंक में, कइसे आम अवाम।।199।।

इन्द्रपुरी, पटना

(३८) पाण्डेय सुरेन्द्र

पुरहन दह लह-लह करे, जइसे लागे आग।
सुरुज उतरल आँख में, चित में लागल दाग।।200।।
माथे पगड़ी बाँध के, लं हाथे बन्दूक ।
अइसन राजा गाँव के, दिहलस मड़ई फूँक।।201।।
मुड़कट्टा के थान पर, चढ़ा-चढ़ा के मुण्ड।
ठाँय-ठाँय देवा हँसे, गिरल पड़ल बा झुण्ड।।202।
मिले साँच के आँच जो, खिले काँट में फूल।
डूब गइल मन नाव जस, जइसे पवलस कूल।।203।।
जँगला से फिकफिक करे, असरा लागल आँख।
रोटी में जवरन कसल, फइलत नइखे पाँख।।204।।

– सीतापुर रोड योजना, लखनऊ

(३९) पी० चन्द्रविनोद

मूँदी अपना आँख के, रूई भर लीं कान।
मुँह पर जाबी जाब लीं, तब बच जाई जान।।205।।
जो बोलब कुछुओ इहाँ, कछु केहू ली बूझ।
खुद के खुद में राख लीं, सबसे नीमन सूझ।।206।।
देखीं, भरल बजार बा, कतहीं नइखे ठाँव।
का खोलब गठरी इहाँ, जाई अपना गाँव।।207।।
दिल्ली भले करीब ना, दिल ई तबो करीब।
दिली बात हम का कहीं, दलदल परल गरीब।।208।।
ना कबहूँ सिकवा करीं, मुँह राखीले बन्द।
देखत-देखत बन गइल, आपन दिल बा छन्द।।209।।

बी०एच०यू०,वाराणसी

(४०) प्रकाश उदय

दुर बुड़बक, सरकार के, सर हउए ई कार।
देसे के प्रोग्रेस के, सिम्पल ई रफ्तार।।210।।
काहे मंत्री कार से, बिगले नेटा पोंछ।
घोंस-घोंसि जे देस के, रहे तनाइल मोंछ।।211।।

श्री बलदेव पी०जी०कॉलेज,बड़ा गाँव,वाराणसी

(४१) वंशीधर तिवारी

लोभ सतावत लोग के, जरूर करावे नास।
सतयुग कलि कवनों युग, एकही बहल बतास।।212।।
आदिमियत से जे दूर, भइलन चकनाचूर।
रावन कंस आ दुर्योधन , बरिआरा मसहूर।।213।।
हमहीं जगाई जग के, हमे जगावे चोर।
मोटा बेवहार जानि, बूझि रहल कमजोर।।214।।
मामा के बेटवन से, तंग बा भइल मिजाज।
चचे के करनी के फल, भारत भोगत आज।।215।।
माई-बहिन आ देस के, न जे बचावे लाज।
ओह बेटवा के जनम, भइल कोढ़ में खाज।।216।।

संकटमोचन नगर,आरा(भोजपुर)

(४२) बद्रीनारायण तिवारी 'शांडिल्य'

सूरज से ले रोसनी, चाँद रहे मुसुकात।
धरती आड़े आ गइल, भइल अन्हरिया रात।।217।।
नर दोहा हीरा पड़ल, तबहूँ चमक न जाइ।
जे ओकर बा पारखी, फउरन लेइ उठाइ।।218।।
मानसरोवर तीर पर, बइठल करिया नाग।
दर-दर भटकस हंस जी, खोजस आपन भाग।।219।।

212-राजपूत नेउरी, कोलकाता(प०बं०)

(४३) बरमेश्वर सिंह

का गाई अब गीत हम, बहिरन के बा गाँव।
साज सजाइब हम मगर, ई सब समझी काँव।।220।।
निजीकरन के बात ई, बा अमीर के चाल।
अब गरीब कहवाँ रही, सगरी पसरल जाल।।221।।
सीता मरियम फातिमा, एक गाछ के फूल।
टहनी सबके बा अलग, बाकिर एके मूल।।222।।
उहाँ सोर अल्लाह के, इहाँ राम के नाम।
इहे सियासी खेल में, धरम भइल बदनाम।।223।।
रोटी-कपड़ा-हीन अब, बिलखत आम अवाम।।
अटल बिहारी जी जपस, राम लला के नाम।।224।।
मन के गति बिन रोकले, कहीं मिले ना ठाँव।
ठहरीं, समझीं, तब चढ़ीं, पाइब आपन गाँव।।225।।
लोकतंत्र के हम मगर, नाम नया अब देब।
लूट जहाँ सिंगार बा, सोभा जाल-फरेब।।226।।

धनडीहा, भोजपुर (बिहार)

(४४) (प्रो०) ब्रजकिशोर

भले राति-भर गाँव-घर, पसरल घुप्प अन्हार।
होई भोर अँजोर से, नवजीवन संचार।।227।।

महेन्द्रू, पटना (बिहार)

(४५) बाबू राम सिंह 'कवि'

नीमन बाउर सोंचि के, पहिले करऽ बिचार।
बढ़िया काम कइल करऽ, तब फइली उजियार।।228।।
आदर, ज्ञान, सुधन, विद्या, बंटले से बढ़िआय।
जे करी कंजूसी ए में, ऊ पीछे पछताय।।229।।
सेवन को सतसंग भला, खेवन को भल काम।
देवन को सेवा भला, लेवन को हरिनाम।।230।।
जहाँ तलक कन्नू पहुँच, करऽ सेवा सत्कार।
सेवा से मेवा मिली, पइबऽ प्यार-दुलार।।231।।

www.bhojpurisahityangan.com

पीछे सिखाव आन के, पहिले अपने सीख।
भल होय जीव-जगत के, बात तू अइसन लिख॥232॥
जे घमंडे लब-लब भरल, खुद में राखल फूर।
ऊ नीचे अइसन गिरी, जीभी चाटी भूर॥233॥
अपन बड़ाई जे करी, भारी संखी सान।
ऊ न कयो आगे बढ़ी, बाउर कही जहान॥234॥
सब कुछ से खाली अगर, एह में केकर दोस।
करनी जस धरनी मिले, कर अबहुँ से होस॥235॥
जवन करत सरम लागे, बरे जगत में आग।
ओके बाउर जानि के, तुरते कई द त्याग॥236॥
नारी हई नरायनी, सबे के जनमावस।
सुख-सान्ति उपजाय इहे, सबके ई बसावस॥237॥

भगेली, बलसाढ़ (गुजरात)

(४६) डॉ० ब्रजभूषण मिश्र

बीत गइल आधा सदी, बदलल ना संदेस।
कवनो एगो लोथ अस, घुसुक रहल बा देस॥238॥
बेंचे पर सस्ता बिके, कीने महँग समान।
खेती वाला देस में, सबसे दुखी किसान॥239॥
बीतल बरिस पचास में, रहल बजावत गाल।
रह के पछ-विपछ में, चलत रहल खुटचाल॥240॥
नित्य नया बा उग रहल, कंकरीट के गाछ।
जिनगी जंगल के भइल, सबका लगल कवाछ॥241॥
धरती रंगल खून से, अइसन बा तकदीर।
ढोवत-ढोवत लास के, थाकल बा कश्मीर॥242॥
एक दिन न्यूयार्क में, सौ दिन बा कश्मीर
कतहूँ जाला ज्ञान जब, ढरकत नयनन नीर॥243॥

काँटी थर्मल पावर, मुजफ्फरपुर

(४७) भगवती प्रसाद द्विवेदी

कुल्हि गोपी गइली कहाँ, गइलन कहाँ गोपाल।
ना जाने काहें भइल, टूँठ कदम के डाल ??245॥
उहे पुरनकी रूढ़ि बा, उहे पुरनका लोग।
नवकी रहिया पर बढ़ल, लागल फिल्मी रोग॥246॥
बड़ लोगन के बात बड़, हम भइलीं लतखोर।
पुतरा जरल सनेह के, कटल प्रीत के डोर॥247॥
सहरी बाबू ! देखि लीं, आज गाँव के हाल।
अनबियहल बेटी परल,पढ़ि-लिखि बइठल लाल॥248॥
खेत-बधार बिकल, तयो, कम परि गइल दहेज।
बिटिया छछनत रहि गइलि,लखि ना पवलसि सेज॥249॥
मुरसा-अस मुँह बाइ के, धियवा भइलि जवान।
हाथ पियर कइसे करीं, घर-आँगन हलकान॥250॥
उहे पुरनकी राह बा, उहे पुरनका खेल।
बेटी बूड़ो भा जरो, छिड़कि किरासन तेल॥251॥
सरधा के मूरत हई, लछिमी कहे समाज।
सभ दुरजोधन हो गइल, बाँची कइसे लाज ??252॥
पनही टूटल गोड़ के, तन के छूटल चाम।
मन माफिक वर ना मिलल, का होई हे राम!!253॥
बेटी बियहत खा इहाँ, दुख-पहाड़ धहरात।
पारी आवत पूत के, बिसरि जात सभ बात॥254॥

पोस्ट बॉक्स-115, पटना, (बिहार)

(४८) डॉ० भगवान सिंह 'भास्कर'

धर्म-जाति जंजाल में, जकड़ल सउँसे देस।
ना जो समरसता बने, कइसे मिटे कलेस ॥255॥
चढ़ल जवानी आज बा, होई कल बेकार।
कर भगती भगवान के, ना त जीवन खार॥256॥
आदिमी एह संसार में, नाटक रचे हमेस।
बाकिर होखेला उहे, जे चाहे अखिलेस॥257॥
सुख-दुख आवत जात बा, एकर नाहिं मलाल।
मेहनत से दुख जा सकी, सुख के जरी मसाल॥258॥
मन से मेहनत जे करी, ईस्वर में नित ध्यान।
काज सफल होइबे करी, निस्चित बनी महान॥259॥
सादी कइले धूम से, गइली ऊ ससुराल।
बाकिर माँग दहेज के, भइल जान के काल॥260॥
धर्मसास्त्र के नीति बा, दान महाकल्यान।
बाकिर अब त अपहरन सबसे भइल महान॥261॥

लखरांव , सीवान

(४९) मनोकामना सिंह 'अजय'

दरमाहा के आस में, बदले जात उधार ।
जइसे बरखा के दिनन, बेबस बा बनिहार॥262॥
बिदेस के समानन से, सजल-धजल बाजार।
खरीदे वाला कम बा, जादा बेचनिहार॥263॥
बार-बार न आर-पार, हो जाय एक बार।
अबकी झंडा लहराई, ए पार, ओह पार॥264॥
पछिम के बहल हवा जे, उलटल-पुलटल चाल।
रहे पोता के असरा, पूते गइलन खाल ॥265॥

छोटा गोविन्दपुर,जमशेदपुर

(५०) मनोज कुमार सिंह 'भावुक'

'भावुक' अब बाटे कहाँ, पहिले जस हालात ।
हमरा उनका होत बा, बस बाते भर बात ॥266॥
माई रे जाई कहाँ, देवता पूजल तोर ।
एक दिन तऽ होखबे करी, हमरो खातिर भोर ॥267॥
तहरा से केतना लड़ीं, जब तू रहलऽ पास।
बाकिर अब तहरे बिना, मन बा रहत उदास ॥268॥
उनके के सब पूछ रहल, धन बा जिनका पास ।
हमरा टूँठे भाव के, के डाली अब घास॥269॥

www.bhojpurisahityangan.com

चढ़त उग्र के धूप बा, जियरा बा छपिटात ।
'भावुक' दहकत साँस अब, ढांवल नइखे जात ।।270।।
जिनिगी के दालान में, का-का बा सामीन ।
ख्वाब, पंख, कइंची अउर, लोर-पीर मुस्कान ।।271।।
रिस्ता-नाता नेह के, मौसम के अनुकूल ।
कबो आँख के किरकिरी, कबो आँख के फूल।।272।।
एगो से निपटी तले, दोसर उठे बवाल ।
केहू कतनो हल करी, जिनिगी रोज सवाल।।273।।
पाँख खुले तऽ आँख ना, आँख खुले तऽ पाँख ।
एहो से अक्सर इहाँ, सपना होला राख ।।274।।
'भावुक' कवना बात के, होई भला गरूर ।
ना पद, ना धन, ज्ञान बा, ना कुछ लूर-सहूर ।।275।।

महाड़, रायगढ़ (महाराष्ट्र)

(५१) माहेश्वर तिवारी

कोहरा में सूरज छिपल, अइसन भइल बिहान।
जनता दूबर हो गइल, मोटिअइलन परधान ।।276।।
कोहरा भरल अकास में, धरती भइल उदास।
दिन आइल अस हाथ में, आधा-भरल गिलास।।277।।
मस्जिद से मन्दिर कहे, बहिना एह पर सोच ।
तोहरा लागल चोट जब, दिल में परल खरोंच ।।278।।
सांति-पाठ कइलन भले, तनिक हो गइल चूक।
मन्दिर -मस्जिद में मिलल, हथगोला-बन्दूक ।।279।।
दिन-पर-दिन सूखत गइल, नदियन क संसार ।
पहिले जइसन अब कहाँ, पानी क व्यवहार ।।280।।
सिकन बढ़ि गइल माथ के, गइल पुरनका साल।
जे अबहिन आइल न बा, ओकर कवन हवाल।।281।।
दाता, का हमसे भइल, कउनो भारी भूल ।
मीठी-मीठी बात अस, जस गूलर क फूल ।।282।।
आपन देस महान बा, नेता अउर महान ।
धुलल कमीजन के इहे, बा असली पहिचान ।।283।।
अस्टमेंस बा लगन में, अस्टम में लग्नेस ।
अइसन जातक जनम भर, भोगे कठिन कलेस ।।284।।
हल्दी-मेंहदी पर चढ़ल, अजब बिदेसी रंग।
भइल सुहागिन अउर के, तजलसि नइहर संग ।।285।।

नवीन नगर, मुरादाबाद

(५२) मिथिलेश 'गहमरी'

बादर, बिजुरी चाँदनी, छाँह कहअ भा घाम ।
सब सूरत भगवान के, भले हजारो नाम ।। 286।।
दुनिया में भगवान के, अजब-अजब तसबीर।
खइला से राजा मरे, भूखन मरे फकीर ।।287।।
बाग-बाग लहसत रहे, डारि-डारि मधुमास।
बाकिर एगो गंध बिनु, सउँसे फूल हतास ।।288।।
जप-तप पूजा-पाठ कर, चाहे तीरथ-धाम ।
जब तक बाटे मन मइल, सब कुछ बा बेकाम।।289।।
लोग कहे "अब माँच पर, झूठ जमवलस धाक।
कइसे मानी 'सेर' से, भारी पड़ी छँटाक ।।280।।
बँसुरी लेके हाथ में, कृष्ण बनी ना कंस ।
लाख करे दुनिया जतन, काग न होई हंस ।।281।।
घाटी से परबत मिलल, झरना से दरिआव ।
जय हो भारत वर्ष अब, तोहरो धन्य चुनाव ।।282।।
बिहँसे धरती पर भले , चाहे खिले अकास ।
फूल रही तऽ हर जगह, बाँटत रही सुबास ।।283।।
मानवता के जब तलक, धरती लहू लुहान ।
कइल-धइल सब पाप बा, कीर्तन अउर अजान।।284।।
अल्ला बड़ा कि देवता, व्यर्थ सकल रउराठ ।
तोस दुना से कब बड़ा, बारह पाँच साठ ।।285।।

गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

(५३) मुफलिस

आजु देखि इन्सान के, थरथरात इन्सान ।
दया धरम इन्साफ के, दूर भइल पहचान ।।286।।
कथनी-करनी में कहाँ, कतहीं बा सम्बन्ध।
स्वारथ के चलते इहाँ , लोग भइल मतिअन्ध।।287।।
गली-गली गुण्डा फिरें, सज्जन रहें लुकाय ।
रँगदारी अइसन करें, सबकर मन घबराय ।। 288।।

डुमराँव, बक्सर (बिहार)

(५४) योगानन्द 'हीरा'

नइखे इहाँ हमार कुछ, सब कुछ हवे तोहार।
मूल मंत्र ई आज के , जानि रहऽ मन मार।।289।।
उड़ना बा आकास में, आपन पाँख पसार।
देखी-परखी लोग सब, एक प्रेम बा सार ।।290।।
सुनीं, गुनीं, चुप्पे रहीं, अधकचरन के पास ।
का जाने का उगिलिहे , नागिन के बा बास ।।291।।

कंकड़बाग, पटना

(५५) डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव

मन के हमरा बाति के, ना बतलाई कोय।
लकवा मरलस जीभि के, बाति कबो ना होय।।292।।
आपन घर के जारि के, लेहि तमासा देख।
चतुर चाभे रसगुल्ला , बतासा लिखल लेख।।293।।
सोहागरात का डरे, काँप गइल ई मन ।
विधाता मन का ऊपर, अइसन देहले तन ।।294।।
गते-गते सभ कोड़ि दी, बिले समाइल मूस ।
घर से सभे चलि जाई, गरीबी रही घूस ।।295।।
राजनीति के खेत में, बकरी बनले लोग ।
साँढ़ बनि ऊ चरत रही, ताकत रहिहन लोग ।।296।।

www.bhojpurisahityangan.com

तीर बना के नयन के, देनी आप चलाय ।
आँखि सपना धरि गइल, बा अब कौन सहाय।।297।।
हाँके के पैना बा, गइल बन्दूक प हाथ ।
जिनिगी बीतल लड़े में , ना दी कोई साथ ।।298।।
तन के जोस बिसरत ना, मन रहत अकुताइल ।
साल्हे बीतल खोज में, हीरा बा बिलाइल ।।299।।
अइसन दिनवा खिचड़ी के, छाप लेला बादर।
सभे डरत सकरात से, सुरूज ओढ़स चादर ।।300।।

वाणी बिहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली

(५६) रामनाथ पाण्डेय

नेता अइसने चाहीं, सिद्ध कर ले सब काम।
करोड़ से खेलल करे, लगे न कौड़ी दाम।।301।।
लंद-फंद में पी-एच०डी०, डिगिरी मिलल अमोल।
के अब आई सामने, खोले हमार पोल ।।302।।
संग करऽ नेतवन के, चाहऽ जो भवपार।।
सरग-नरक कुछो होखी, सफल रही सब कार।।303।।
देस भक्ति के छोड़ बात, लाखन टका कमा ल ।
आपन भेद बता द तूं, दुसमन मीत बना ल ।।304।।
असली सुराज इहे बा, जबर अवर के खाय।
लाठी वाला के भइंस, दुनिया फेंनू गाय ।।305।।
बे दाम बेटी धनके, काम के बिना पूत ।
नइखे धेला पाल में, कइसे खोती खूंट ।।306।।
सीमा पर दुसमन जमल, तनले बाटे तोप।
लड़ के जीती पाक ना, मत खोलऽ तूं गोप।।307।।

उमा निवेश, रतनपुरा,छपरा(बिहार)

(५७) राकेश रंजन रणधीर

कहाँ गइल ऊ बिम्ब, रस, कहाँ गइल ऊ छंद।
कविता के घर के भइल,सारा खिड़की बंद।।308।।
गोड़ अगर बाटे टिकल, सिर पर करीं यकीन।
आसमान तबतक रही, जबतक रही जमीन।।309।।
तू मुदई, मुंसिफ तुहीं, का राखीं सन्तोस।
सूफत त रहले रहीं, हमरे लागी दोस ।।310।।
लोकतंत्र के नाम पर, चारो ओर कुराज।
जात-पाँत में बँट गइल, सारा देस-समाज।।311।।
काश्मीर से कम कहाँ, आपन राज बिहार।
गाँव-गाँव में होत बा, रोजे नर-संहार।।312।।
राजनीति के मंच पर, जे बड़का से होन ।
पढ़ल-लिखल नर्तन करे,भइंस बजावे बीन।।313।।

कचहरी रोड, सीवान

(५८) राधिका रंजन सुशील

जीवन-जन्तु से आदमी, सीखत बा अब ढंग।
बदल रहल बा देख लीं,गिरगिट जइसन रंग।।314।।
आज जमाना के भइल, बाटे कइसन रीत ।
गावत बा हर आदमी, आपन-आपन गीत ।।315।।
हाल जगत के हो गइल, कइसन आज अजीब।
दोस अमीरन के रहे, दोसी बनल गरीब ।।316।।
कबो लड़ाई ना लड़ी, खाली ई तलवार ।
मत भूलीं, बा जंग में, हिम्मत के दरकार ।।317।।
पइसा के रउआ भले , बाटे बहुते जोर ।
बाकिर दुस्मन के कबो मत समझीं कमजोर ।।318।।
लमहर-लमहर प्रस्न के , होला तुरत निदान ।
मन में अपना आदमी, जब लेवेला ठान ।।319।।

तरुणनगर, गुवाहाटी (असम) -5

(५९) राम प्रताप तिवारी 'प्रताप'

जब से मिलल सुराज ई, बढ़ल फूट व्यभिचार ।
खउलत मन के ताल बा, भूलि गइल आचार ।।320।।
नीति धर्म के राह अब , लागत बा प्रतिकूल ।
लेखनी उगिलऽ आगि तूँ, बहुत बनवलू फूल ।।321।।
गाइ-भइँस अनघा रहे, गोरस के एह गाँव ।
पाउच अब सगरो बिके, मिटल दूध के नाँव ।।322।।
फल, अनाज, जलवायु के, गुन हो गइले नस्ट ।
चढ़ल प्रदूसन अस जगत,बढ़ल रोग अउ कस्ट ।।323।।

गायघाट,बलिया (उ०प्र०)

(६०) डॉ0 राजकुमार सिंह कुमार 'विष्णुपुरी'

पिरीत अइसन करीं, बहरी-भीतरी एक ।
मीत एके गो ना बने, मीतो बने अनेक ।।324।।
आदमी धरती पर बसे, पंछी उड़े आकास ।
मोर मगन झूमे इहाँ, चातक मरे पियास ।।325।।

विष्णुपुरा, गुलटेनगंज (सारण)

(६१) (डॉ0) रामरक्षा मिश्र 'विमल'

कइसे ओठन पर हँसी, आँतर धन्हके आग ।
खुसबू से मन ना भरी, चाहीं रोटी-साग ।।326।।
नेकी करीं, भुलाइ दीं, जइसे दिन मनहूस ।
राख करी बनि आगि ऊ,जिनिगी के सभ फूस।।327।।
पइसा नजर उठाइ दे, पइसा नजर झुकाय ।
नजर उतारे ऊ कबो, कबहूँ नजर बसाय ।।328।।
जे मनई आपन सदा, समुझेला औकात ।
ओकरा जिनिगी में कबो, ना दुख के बरसात ।।329।।
पइसा गुन के खान ह, पइसे सुन्दर रूप ।
बिन पइसा गुन एक ना, नाहीं सुघर सरूप ।।330।।
पइसा रूप बनाइ दे, पइसा रूप बिगाड़ ।
पइसा में ताकत बहुत, पतझड़ करे बहार ।।331।।

कलिमपोंग,दार्जिलिंग (पं०बंगाल)

(६२) रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

ओने खाली फूल बा, एने खाली काँट ।
दू हिस्सा में आज ऊ, मौसम देलस बाँट ।।332।।

www.bhojpurisahityangan.com

आगा-पाछा देख कं, डाले कं बा पाँव ।
डंगे-डंगे पर इहाँ, यारं मनमांटाँव ।।333।।
खांरी-खावाँ गाँव में, बा आन्ही कं पाँव ।
ले जाई छान्ही उड़ा, जाई नाहीं बाँव ।।334।।
घर-घर में पसरत गइल, अस हम-हम कं जोर।
उड़ल कबूतर, बा मचल, कउवन कं अब सोर।।335।।
फुहियन से लहकत बदन, झरत मेह दिन-रात।
तड़प-तड़प बिजुरी गिरत, धमकल बा बरसात ।।336।।
दुमकत-झमकत चल रहल, पछवइया हर द्वार।
बदलल-बदलल मिल रहल,घर-घर कं व्यवहार।।337।।
चान रूप कं ताल में, बा उतरल निर्बाध ।
खिलल कमलिनी साध कं,उमड़ल प्रेम अबाध ।।338।।

सिविल लाइन्स,बक्सर(बिहार)

(६३) रिपुञ्जय निशान्त

जंगल-जंगल घूम कं, करं सान्ति कं खोज ।
कोलाहल से ना मिलं, फुसंत एको रोज ।।339।।
गिरत कबूतर सांति कं, भइल घवाहिल पाँख।
हियरा बिलखे देख कं, टप-टप बरिसे आँख।।340।।
आँधी आइल जोर से, भइल बड़ा सन्ताप ।
उजड़ल खोंता देख कं, पंछी करं विलाप ।।341।।
लुत्ती चुपके फेंक कं, छेड़ल बाड़ऽ राग ।
मड़ई जरी पड़ोस कं, घर-घर लागी आग ।।342।।
इहे जगत कं हाल बा, कहं पराया दोस ।
गलती करं हजार पर, बनल रहं निर्दोस ।।343।।
बात अहिंसा कं करं, बूढ़ा बाघ समान ।
कंगन कं लोभी पथिक, व्यर्थ गँवावे प्रान ।।344।।
बीन सँपेरा फूँक कं, नचा रहल बा नाग।
फुफकारे लागल कहीं, त बिगड़ी अरु भाग।।345।।
सब्दन कं गँठजोड़ में, अझुराइल बा अर्थ ।
अभिव्यंजन में भाव कं, भासा तक असमर्थ ।।346।।

रामराज चौक, दहियाँवाँ, छपरा

(६४) रेयाज मोहियुद्दीनपुरी

बातं असली मार ह, चोट सहल ना जाय।
जं गोली सं ना मरे, बात से मारल जाय ।।347।।
अमन-चैन कं नाम पर, बन्दूकी फरमान।
ईस्वर कं पूजा बदं, बकरी कं बलिदान ।।348।।
मड़ई टाटी छाइ कं, गुजर करं इनसान ।
जेकर सपना देह बा, घर बा आलीसान ।। 349।।

मोहियुद्दीनपुर , सीवान (बिहार)

(६५) ललन प्रसाद पाण्डेय

काँट निकाले काँट कं, बीख त मारी बीख।
गोली कं बदल गोली, बाति मनाले भीख ।।350।।
लतखोरन कं बात का, ओकं चाहीं लात ।
आदत अइसन पाक कं, भावं नाहीं बात ।।351।।
संसदं पर भइल हमला, ताकत का बाड़ मुँह।
चिउंटी अस पीस अरि कं,निकले नाहीं ऊँह।।352।।
काका-आका का करी, भरी उ झूठं जोस ।
होखी जब छुट्टा तांडव,आई तब नू होस ।।353।।
पाक त पाँक ह पेट कं, ह इरिखा कं मवाद ।
कहाँ समुझी भाई ऊ, सुन मानवतावाद ।।354।।
भस्मासुर कं ई भाई, दोसर ह पाकिस्तान ।
भागल फिरस आन जना,धरि कं आपन कान।।355।।
कविता गोला बनि जाय, बरिसे अरि कं देस ।
राग आग बनि कं बहो,जरा कं करे सेस ।।356।।
भेद-भाव भुला चलीं, सीमा चाहं आज ।
असम से कसमीर तक, गीरत बाटं गाज।।357।।
नापाकी आँखि फोरि द, कपार तूं क द चूर ।
खाल खींच ल दुसमन कं,भरि द ओह में धूर ।।358।।
चूक गइल देस अब जे, मिली ना मौका फिर।
विस्व दरबार में तकबऽ,बोका बनल तूं गिर।।359।।
संयम, सहनसीलता अब, कायरता कहलाय।
पूछी अगिला पीढ़ी त,उत्तर कौन बतलाय।। 360।।

बरदुवी बाजार, तिनसुकिया (असम)

(६६) वकील दीक्षित

आमदनी कं ठीक ना, खरचा बेसुमार ।
आई अइसन एक दिन, रही न पूछनिहार ।।361।।
पालं जब पइसा रही, मिलिहं मीत हजार।
बहनोई कं के कहो, मिल जइहं तब सार ।।362।।
देस-भेस बदलं भलं, बदलं ना संस्कार ।
टाँग उठा मूतं कुकुर, सगरो एह संसार ।।363।।
समुझावल बिरथा गइल, भइलन ठहे हाल।
बिसधर सीधा चलं ना,कुछुओ बदलं चाल ।।364।।
मरन मरन सब जग कहे, मरन न चाहे कोय ।
मरन मरन जब-जब मिले,तब तब जीवन होय।।365।।

बोकारो स्टील सिटी (झारखण्ड)

(६७) विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव

अँखियन से कजरा उठल, बदरा उड़ल अकास।
जा बरिसऽ तनिका जहाँ,प्रीतम कं बनवास ।।366।।
अँखिया से जो चू पड़े, बुंदनिया दू-चार ।
फिरती में बरिसा दिहऽ,आरति लेब उतार।।367।।
तूँ नदिया कं धार इक, हम दुपहर कं प्यास।
ग्रीसम-ग्रीसम दउड़ते, आ गइनी मधुमास ।।368।।
वादा फरं इहाँ सदा, निवांचन का खेत ।
पड़ं बनौरी जेठ तरं, ग्रीसम मरुथल रेत ।।369।।

www.bhojpurisahityangan.com

मान गले मनुहार बिन, नयन गले बिनु रोय।
प्रान गले बिनु चोट के, साँचा प्रीती होय ।।370।।
लउके लाग दिवस में, मन के गइल करार ।
जब से छूटल देहली, कुर्सी, बँगला, कार ।।371।।
बोटर तूँ गेहूँ, चना, आलू, बैंगन, ऊख ।
जाति, बाहुबल, दाँत, मुँह,हम कुरसी के भूख।।372।।
गजरा से कजरा कहे, अइसन फूटल भाग ।
उमर-कैद जस दे गइल, हमें पेट के आग ।।373।।

सुगौली, पूर्वी चम्पारण

(६८) वीरेन्द्र कुमार मिश्र 'अभय'

तनिके भर के भूल से, धनकत बा कश्मीर।
जे ना परखल समय के, का ठोके तकदीर ।।374।
राम-राज के कल्पना, मगरे रावन राज ।
बापू तहरा देस में, अइसन हालत आज ।।375।।
लूटे-कूटे रात-दिन, जेकर जस अवकात ।
कोल्हू से तोसी कहे, जनमे बितल पेरात ।।376।।
गोरा गइले, का भइल ! बाँचल सब करतूत।
करिये के पूजा करी, सन्ताई ह भूत ।।377।।
संसद जहवाँ के भइल, जस मछरी बाजार ।
गरिमा महिमा घट गइल, जुटले कुकुर-सियार।।378।।
संसद ह सर्वोच्च अंग, रचे देस के रेख ।
आँसू ढारके आँख से, दृश्य सदन के देख ।।379।।
सोना जरि के आग में, ना होला जरिछार।
असली त असली रहे,ई जिनिगी के सार ।।380।।
तेल-फुलेल लगाइ के, कतनो अइँठऽ देह ।
माटी माटी में मिली, ना इचको सन्देह ।।381।।
उन्जर धप-धप ऊपरा, कुनकुच भितर करेज ।
अइसन से अलगे रहऽ, ता जिनिगी परहेज।।382।।

ससना, सारण (बिहार)

(६९) डॉ0 वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय

बंद रही संवाद जब, बढ़ते रही विवाद।
घाव रही टभकत- टिसत, जबले रही मवाद।।383।।
मजहब ना देबे कबो, नफरत के संदेस।
अफवाहन का आग में, जरत रहेला देस ।।384।।
रहे पढ़ावत जे इहाँ, सदाचार के पाठ ।
देख पुजाई पाप के, लाजे भइलन काठ ।।385।।

प्रभा निलयम,रमना, मुजफ्फरपुर

(७०) डॉ0 शंकर मुनि राय 'गड़बड़'

अँगना में तुलसी रोवस, बहरी पाकड़ नाँम।
बरगद पीपर सब रोवस, डगडर, बैद हकीम ।।386।।
मरदानी सबकर गइल, सभे हो गइल पस्त।
औरत, औरत ना रहल, चीज हो गइल मस्त ।।387।।
गीता, रामायन गइल, गइल कुरान अजान ।
ईलू-ईलू हो गइल, लइका, बुढ़ जवान ।।388।।
केहू घोटाला कर रहल, केहू करे विचार ।
केहू फिल्मी धुन में, लूटे यूपी बिहार ।।389।।
सोहर, गारी-गीत ना, समधी के जेवनार ।
लोरी, कजरी, फाग ना, ना टेंकी जंतसार ।।390।।
किसन-कन्हैया पार्क में, सीटी देस बजाय ।
राधा गायस झूम के, ले खटिया सरकाय ।।391।।
रामनवर आ भरत में, अइसन भइल भिडंत ।
खेत बँटइया हो गइल, दशरथ भइलन संत ।।392।।
लछुमन के हुदुकी चले, हरदी गुर दिखाय ।
तवनों पर सीता कहस, अँगना रही गेंड़ाय ।।393।।
भउजी से भइया कहस, करके तनिक विचार।
लइका-भइका छोड़ि के,चल-चली हरिद्वार ।।394।।
होस्टल में लइका रहस, 'गड़बड़' मेहर साथ ।
बाप-मतारी मंठ में, करे मोबाइल बात ।।395।।

जोबट, झाबुआ (म०प्र०)

(७१) (डॉ0) शम्भुशरण

सभी पराती गा रहल, पूरूब सउँसे लाल ।
सेंदुर उड़त अकास में,अथवा उड़त गुलाल ।।396।।
पानी सूखल ताल के, जलचर चलत लखार ।
जइसे झीना वस्त्र में, सब तन लगे उघार ।।397।।
रहलू जिनिगी भर सदा, सटल गरीबी साथ ।
मुअला पर जइबू कहाँ, चिन्ते फाटत माथ ।।398।।
सरद पूर्णिमा रात में, सुन मुरली के तान।
सउँसे वृन्दावन भइल, जइसे व्याकुल कान ।।399।।
तपत जेठ बा गगन से, बरसत तेज अँगार ।
गरमी के मारल फिरत, हाँफत स्वान सियार।।400।।
उठत चलत कुंडल हिलत, छूअत उनकर गाल।
बेर-बेर के रगड़ से, लागे लाल गुलाल ।।401।।

चित्रगुप्त नगर, पटना

(७१) डॉ0 (श्रीमती) शारदा पाण्डेय

जब ले तन में प्रान बा, तब ले बा संसार।
जब उड़ि गइल पखेरूआ,सुन्न भइल दरबार।।402।।
मन मिरगा व्याकुल भइल, कस्तूरी के गंध ।
का कंकरा से ऊ कहो,परल जगत के फंद ।।403।।
होखेला संतान के, सुख अलगे पुरजोर ।
फूल खिले, सूरज हँसे, दीआ भइल अँजोर।।404।।
कोइला जइसन कर्म ह, ई दुरजन के संग।
ठंडा पर करिआ करे, जरे जगवे अंग ।। 405।।
दिन में पूजे देवता, राति चढ़ावे भंग।
अइसन नेता के चलते, देस भइल बदरंग।।406।।

www.bhojpurisahityangan.com

सदा मीठ बोलत रहीं, मनके मंटी दुक्ख।
का जानं कब का घटी, इयादं दीही सुख।।407।।
जेकर जप-तप देखि कं, सिव दिहलं बरदान।
भस्मासुर ऊहं भइल, कठिन बचावल प्रान।।408।।
दुस्ट तजी ना दुस्टता, कइ लऽ कोटि उपाय।
बीन सुनावऽ साँप कं डँसि कं जाइ पराय।।409।।
रूप, लाज, गुन तीनि सं, तिरिया कं पहचान।
वस्त्रहीन अंग अब नपे,सुन्दरि बनं महान ।।410।।
राह निहारत स्याम कं, गोपी भइल उदास।
दिन आँखी में कटि गइल,राति करं उपहास।।411।।

भरद्वाजपुरम, प्रयाग - 211006

(७२) शारदानन्द प्रसाद

फूलो सं अनुराग बा, काँटो से बा प्यार।
जे मर्जी हो द उहं, दुनिया कं करतार।।412।।
कंकरा कं नीमन कहीं, कंकरा कं कुछ अउर।
कंहू जरती आग बा, कंहू तलफल भउर।। 413।।

पश्चिमी शिवपुरी, पटना

(७३) डॉ० शिवदास पाण्डेय

मन सहकल लादंन कं, टूटल पेन्टागॉन ।
मन बमकल बम बूश कं,धनकल तालीयान।।414।।

सुधांजलि, मीठनपुरा, मुजफ्फरपुर

(७४) शिवपूजन लाल विद्यार्थी

दान-धरम कं मुलुक अब, घोटालन कं देस।
गबन, हवाला कं चलत, जोर-सोर से रेस।।415।।
बापू कं संदेस अब, फाँक रहल बा धूर।
पद-पावर कं नसा में, नेता-मंत्री चूर ।।416।।
थउँस रहल रथ प्रगति कं, मंत्रीयन कं भार ।
बरसाती बेंगन नियन, नेतन कं भरमार।।417।।
जनता कं भी रह गइल, बस अब एकं काम
मगन करत सरकार कं, कुचरी सुबहो-साम।।418।।
कंकरा कहीं चोर हम, अउर केकरा साध।
जे रोकित अपराध कं, करत उहं अपराध ।।419।।

प्रकाशपुरी,आरा,भोजपुर

(७५) (डॉ0) शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव

घर-घर में टी०वी० घुसल, ना कयनो प्रतिरोध।
लइकन कं भी जीभ पर,'भाला'अउर 'निरोध'।।420।।
जात-आसरे पूछ कं, देत रहन जा मान ।
अब अन्दाजे चल रहल, मुड़कट्टी अभियान ।।421।।
लमहर उनकर डेउढ़ी, पसरल बा दालान।
सब सवांग अब बाहरं, एकसरहीं बा जान।।422।।
बटी घूमत पेन्ह कं, लहरदार सलवार।
दुलहिन कं घुँघटा उठं, उनका ना स्वीकार ।।423।।
दुनिया दोसर हो गइल, बोंचल ना पहचान।
इहाँ-उहाँ हम का करीं, जे करिहं भगवान ।।424।।
ऊ अमीर का देस बा, ई गरीब बा देस ।
अबहूँ ना चेतब सभं, लागी बड़का टेस ।।425।।

अध्यक्ष, अन्तर वि०वि० बोर्ड,पटना।

(७६) श्रीकृष्ण कुमार पाठक

ओढ़ चदरिया माथ पर, पियलं बहुतं घीव।
ठठरी अइसन देह बा, गठरी अइसन जीव ।।426।।
जबलं दरपन नीक बा, तबलं चेहरा एक ।
दरकल दरपन में दिखं, चेहरा एक अनेक ।। 427।।
जलनसीलता कं जहर, अबकं बा दस्तूर।
भाई बा भा दोस्त बा, सबमें बा भरपूर।।428।।
हार-जीत कं खेल में, जीत सदा ना होय।
जीत अगर होखं सदा, काहं कंहू रोय।।429।।
दादा कहलं बाप सं, जनिहऽ पूत सपूत।
दूँठ बाँड़ रहलं भला, नाहीं पूत कपूत ।।430।।

पूर्वी अशोक नगर,पटना

(७६) (स्व0) श्रीराम सिंह 'उदय'

राउर चिन्ता बा सही, जायज बा उद्गार।
सभ कुँअन में भाँग जब, केकर करबि उबार।।431।।
मनमानी कं राज बा, बा अनीति-अँधियार।
हंस उपेक्षित बा परल, कउवन कं जयकार।।432।।
रंग-ढंग बेढंग बा, कइसे होय सुधार ।
मेठ बनल पुजवा रहल, रंगल बाँड़ सियार।।433।।
चुप रहलं में बा भला, देखि समय कं फेर।
जब नीमन दिन आई त, बनत न लगिहं देर।।434।।
इहाँ कुसल बा हर तरं, राउर मंगल चाह।
पत्राचार करत रहबि, मन में होइ उछाह।।435।।

बाँसडीह, बलिया (उ0प्र0)

(७७) सतीश प्रसाद सिन्हा

गइल अन्हरिया रात कं, चुमकत आइल भोर।
छप्पर-छानी फान कं, पसरत गइल अँजोर।।436।।
एक-दोसरा कं सभं, देखत बाड़ं दोस ।
अपना भीतर दोस कं, नइखं उन्हुका होस ।।437।।
अहंकार कं भूत जब, होला माथ सवार।
भला -बुरा कं ना रहं, तनिको सोच-विचार।।438।।
अइसन भइल कपूत बा, घर-घर कं संतान।
आपन माई-बाप कं, ना देला सम्मान।।439।।
सभकर जिनिगी आजु कं,बा हो गइल बजार।
सभनो कं अब सोच में, बइठल बा व्यापार।।440।।

अम्बेदकर पथ, बेली रोड पटना

(७८) (प्रो0) सन्त साह

जय-जय माई शारदा, सुन लीं अरज हमार।
आ कं एह मझधार में, नइया कर दीं पार।।441।।
-आमद से खरचा अधिक, करं अनाड़ी लोग।
दूध घोव फल छोड़ि कं, ताड़ी खैनी भोग।।442।।

www.bhojpurisahityangan.com

जियरा छटपट बा करत, नैना दरकं लोर।
परदेसी प्रीतम भला, कहिया अइहें मोर ।।443।।
धोती पगिया मिर्जई, पाँवं रहे खड़ाउँ।
पुरुखन के रहुए धजा, लाठी रहे जड़ाउँ।।444।।

भोजनगर, पूर्वी चम्पारण

(७९) (डॉ० श्रीमती) सविता सौरभ

वर्तमान बस साँच बा, भूत भरम लीं जान।
भविस अजानल के भला,कइसे हो सनमान।।445।।
जवन चिरउरी से मिले, बाटे जहर समान।
जे बिन मँगले मिल गइल,ऊ अमरित के खान।।446।।
गोरखधंधा करत में जिनिगी गइल सिराय ।
बेर चले के जब भइल, मन काहे पछताय।।447।।
मतलब से रिस्ता बनल, मतलब से बा प्यार।
मतलब साधल हो गइल,बेमतलब के यार ।।448।।
प्यार परख के के कइल, दिल होला मजबूर।
दिल पर केकर जोर बा, आइल त भरपूर।।449।।

त्यागराज कॉलोनी, बी०एच०यू०,वाराणसी

(८०) साकेत रंजन प्रवीर

साधू गइले जेल में, राज करे सैतान।
'जन-गन', 'वंदे मातरम्',जय हो हिन्दुस्तान।।450।।
असर जमाना के पड़ल, बनल नया पहचान।
[illegible] ज्ञान कै, हृदय भइल वीरान।।451।।
[illegible], मिलल लोग के काम।
दिन-भर के धरना [illegible],सड़क भइल सब जाम।।452।।
के ए घोड़ा के सुनो, के एकर बा राम।
चाबुक पर चाबुक पड़े, बाटे तनल लगाम।।453।।
गाँधी के ए देस में, इहे भइल अंजाम।
सत्य-अहिंसा के जपत, चल गइले सुरधाम।।454।।
मार त खइलस जोलहा, गदहा खइलस खेत।
रहले मुँह ताकत खड़ा,का कइले 'साकेत'।।455।।

कुर्सी रोड, लखनऊ

(८१) सिराजुद्दीन अंसारी

भलहीं बाटे मिल गइल, चिरई के आकास ।
ओतने-भर नू उड़ सकी,जेतना ताकत पास।।456।।
लेबे-देबे में सपथ, दूनू के मन चोर।
के बड़-छोट कहल कठिन,के कउआ,के मोर।।457।।
सोचे में भी हो रहल, अपना लायक बात।
हत्या से दुख ना भइल, बोली से आघात।।458।।
मन के सुन्दर भाव के, चारू ओर निकास।
जो मन में इरिखा जगे,हो अवरुद्ध विकास।।459।।
छोट ऊँचाई जब चढ़े, मन ही मन इतराय।
देखी आगे गह ना, से नीचे ढिमिलाय।।460।।
केहू टेके माथ के, केहू जापे राम ।
लरिकन के मन में बसल, माई के ही नाम।।461।।

लाहरवाघाट, आलमगंज, पटना-7

(८२) सुखदेव प्रसाद

गोली से, बारूद से, उजड़ल गाँव-जवार।
आन्हर बा पियवा मोरा, का पर करीं सिंगार।।462।।
गतर-गतर में पीर बा, बैद परल बीमार।
डूबल [illegible] देस के, राम लगावस पार।।463।।
मानुस [illegible] पाइ के, [illegible]सय-वासना लीन।
सूखल जल तालाब के, जइसे तड़पे मीन।।465।।
जिनिगी के संफा भइल, चरनन में बिसवास।
भटकत बा मन जनम से,अमरित धन के आस।।466।।

उदयांचल, नया जक्कनपुर, पटना-1

(८३) सुधीर प्रियरंजन

खेती करके खेतिहर, रोवे पूका फार।
फजिहत में बा चाकरी, मजा करे व्यापार।।467।।
केहू कोसत भाग के, केहू धुने कपार।
हाथ बड़ा भगवान के, या लमहर सरकार।।468।।
चाहे दाम गइल रहे, कतनो राहत कोस।
मउअत ही जब आ गइल,मंत्री के का दोस।।469।।

तारानगर, चास बोकारो

(८४) सुनील कुमार पाठक

आसपास अँटकल रहल, फटकल सटकल रोग।
'कठवत में गंगा' तबो, करिया मन में भोग।।470।।
रूप अनूप निहारि के, बा गुदगुदी मिजाज।
माया मिली कि राम अब?कबले बाँची राज।।471।।
दोहा अनुपम छंद ह, भावे भाव अथोर।
कविता लौटत दिख रहल,फेरू आज सजोर।।472।।
हमरा उनका बीच में, अन्तर बाटे एक।
ऊ हमरा में रहि सकस,हमरी मरल विवेक।।473।।

सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी,सिवान

(८५) सुभाषचन्द यादव

अल्हड़ गोरी गाँव के, कुछ साँवर, कुछ गोर।
जइसे छरिया ऊख में, रस बा पोरे-पोर।।474।।
नयन कँटीले तीर अस, घूँघरवारे केस ।
घूँघट में मुसुकाइ के, लूटे मन के देस ।।475।।
तन तोरे मोरे नयन, छिन आवत, छिन जात।
तन-मन सब घायल करे, करे घात पर घात।।476।।
आँख मिलवलीं आँख से, भइल प्रेम के रोग।
बिरह सतावे रात-दिन, बैद देखावे लोग।।477।।
आपन टटरी तेल के, सहीं सीत आ घाम।
हमनी के मेहनत करीं, दिल्ली लागे दाम।।478।।

प्राचार्य दारोगा प्रसाद राय कॉलेज,सीवान

www.bhojpurisahityangan.com

(८६) सुरेन्द्र सिंह

इनरासन के बा दया, खूब भइल बरसात।
भइलन सुखी किसान सब,मोली अरवा भात।।479।।
सुख-सम्पति-पद-लाभ हित, कइलस जे उत्पात।
देर न लागल व्यक्ति के, पाला नियन बिलात।।480।।
बदल गरीबी देस में, कइसन आइल राज।
अविवेकिन के माथ पर, बरिसन से बा ताज।।481।।
पइसा -पद प्रिय हो गइल, ओकरे बाटे मान।
ओही खातिर बहुत के, गइल अनेरिया जान।।482।।
बानी रठरा देवता, सभे चढ़ाई फूल।
प्रतिद्वन्दी बइठी उहाँ, जहवाँ होई धूल।।483।।

प्रबंध संपादक 'अभिव्यक्ति',सासाराम

(८७) सुरेश कांटक

करतब आपन भूलि के, देखत अनकर लोग।
रोपे जटही राह पे, कइसन पागल रोग ।।484।।
चानी के चकचउँध में, चहकत बा अन्याय।
सब कुछ हमरा हाथ में, कुरसी, सत्ता, न्याय।।485।।
बिन पानी बकरी मरे, उछलत बाघ नहाय।
गद्दी पर कुक्कुर सुते, माखन मिसरी खाय।।486।।
पूंजी पगहा बेंचि के, खेती करे किसान।
मौसम कुरसी पाट बिच, नीके बनत पिसान।।487।।
नवधा पवधन के लगल, अइसन पछिया मार।
जड़ सूखत, गंधो मिटत, भूलल आपन धार।।488।।
'कांटक' एह संसार के, देखनी अइसन रीत।
झूठ हंसे, माला पड़े, साँच भइल बा तीत।।489।।
माई डूबस लोर में, बाबू रोवस खाँस ।
बबुआ जी गुमसुम रहस, बनि मेहरी के दास।।490।।
सपना टूटत देख के, माई के ना नीन ।
सभ दउलत के ढ़ेर पर, जीये बनि के दीन।।491।।
दू बेटन के बीच में, माई मांगे भीख ।
अगिला पीढ़ी सीख ले, खूबे बढ़िया सीख।।492।।
पइसा के परताप से, रिस्ता भइल मलीन ।
पत्थर के हिरदय भइल, लिहलस बूधी छीन।।493।।
ए 'कांटक' भइया सुनऽ, छोड़ऽ जग के आस।
कुछ करनी अइसन करऽ,सभ के मिटे पियास।।494।।
जनहित खातिर देह ई, माटी में मिल जाय ।
रोपऽ अइसन फँड़ कि, छांह सभे पा जाय।।495।।
'कांटक' तन ई बेचि के, कीनऽ कीमती प्रेम।
छोड़ि सवारथ पूछि ल, जग के कुसल छेम।।496।।
बेटा ओकर बनि रहऽ, जेकर जीवन उदास।
सोंचऽ अइसन फूल के, टूटत जेकर साँस।।497।।

कांट,बह्मपुर (बक्सर)

(८८) सूर्यदेव पाठक 'पराग'

भले भिखारी नाँव के, रहले रतन अनूप।
उनकर रचल 'बिदेसिया',अजगुत युग-अनुरूप।।498।।
भोजपुरी में पत्रिका, के रखले बुनियाद।
कवि महेन्द्र शास्त्री सुधी, आवस बहुत इयाद।।499।।
'भोजपुरी' आगे बढ़ल, पा रघुवंश - प्रसाद।
धन्य नर्मदेश्वर कइल, जे 'अँजोर आबाद।।500।।
स्वामी विमलानन्द के, 'जेहल क सनद' धन्य।
भइल कहानी क्षेत्र के, नेंव दुरुस्त अनन्य।।501।।
कविता-गीत-गजल कथा, उपन्यास युग-सिद्ध।
नाटक, सोध, निबन्ध से, भोजपुरी समृद्ध।।502।।

मढ़ौरा, सारण

(८९) डॉ० स्वर्ण किरण

दहसत बाटे सब जगह, लोग-बाग भयभीत।
जीत बन गइल हार बा, हार बन गइल जीत।।503।।
सान्ति न बहुए हृदय में, धुआँ भरल आकास।
जहर छिंटायल सब जगह, दवा न कवनो पास।।504।।
काल कठोर बनल अधिक, फइलावत बा हाथ।
बाकिर अब्बर अकल का, देता तनिको साथ।।505।।
महँगाई नागिन बनल, करत बिया फुँफकार।
भागत डर के लोग सब, मानत बाड़न हार।।506।।
रोजगार के कमी बा, बहुए नींद हराम।
झूठ देखावत नाच बा, सच होता बदनाम।।507।।
खुदगर्जीपन सब जगह, गायब बा ईमान।
कब तक लाली रखी कुछ,खाली मुँह के पान।।508।।
उतरल बाटे बदहुआ, लोग-बाग बेचैन।
सुख-सुविधा के खोज में, ढरकत बाटे नैन ।।509।।
दिन-दुपहरिया का करी, लूट-पाट के जोर।
जे डकैत बा रूकी का, देख-देख के लोर।।510।।
कब्रगाह ल बन गइल, मंदिर-मस्जिद आज।
सच भागल बा सहम के, झूठ करत बा राज।।511।।
आतंकी के देस में, फइलल बाटे जाल।
हिम्मत सब बेकार बा, बा सुख चैन मुहाल।।512।।

सम्पादक - नालंदा दर्पण, सोहसराय,नालंदा

(९०) प्रो० हरिकिशोर पाण्डेय

नेवता त धोती रहे, सभे हँसल एक साथ।
बाबा के पाकिट घड़ी, गइल कबाड़ी हाथ।।513।।

श्यामचक, छपरा (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

संस्थान में उपलब्ध किताबन के सूची

रचनाकार -डॉ0 रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

1. भोजपुरी शब्दानुशासन (भोजपुरी व्याकरण) कीमत- 30/-
2. सुरतिया ना बिसरे (रेखाचित्र संगह) कीमत- 20/-
3. हवा के बात (ध्वनि रुपक) कीमत- 30/-
4. मेघदूत (भोजपुरी अनुवाद) कीमत- 20/-
5. कैलास मानसरोवर (यात्रा वृतांत) कीमत- 40/-
6. पत्रावली : दिवंगत भोजपुरी सेविन के कीमत- 100/-
7. खेल-तमाशा (नुक्कड़ नाटक संग्रह) कीमत- 40/-
8. एक-से-एक (भोजपुरी हाइकु संग्रह) (सं०) कीमत- 25/-

सुरेश कांटक

9. हाथी के दाँत (भोजपुरी नाटक) कीमत- 40/-
10. भाई के धन (भोजपुरी नाटक) कीमत- 50/-
11. सरग-नरक (भोजपुरी नाटक) कीमत- 25/-
12. समुंदर सुखात बा (भोजपुरी कहानी संग्रह) कीमत- 50/-
13. वंदे मातरम् (भोजपुरी नाटक) कीमत-50/-

रामायण सिंह

१४. कलंगी (भोजपुरी कविता संग्रह) कीमत- १०/-
15. लोकगीता (श्रीमद् भगवद्गीता के भो०पद्यानुवाद) कीमत- 25/-

डॉ0 अमर सिंह

16. विश्वामित्र (भोजपुरी प्रबन्ध काव्य) कीमत- 55/-
17. मर्यादा पुरुषोत्तम (भोजपुरी प्रबन्ध काव्य) कीमत- 55/-

पं0 राम सुभग मिश्र 'रासू'

18. बता दे मीतवा (भोजपुरी कविता संग्रह) कीमत- 21/-

राजबली प्रसाद

19. वारिस बंदना (भोजपुरी-हिन्दी भक्ति गीत माला) कीमत-15/-

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

20. आदमियत (भोजपुरी एकांकी संग्रह) कीमत - 20/-
21. बेगुनाह (भोजपुरी कहानी संग्रह) कीमत - 60/-
22. साक्षात् लक्ष्मी (भोजपुरी सामाजिक नाटक) कीमत - 15/-

पत्रिका के चन्दा

एक प्रति	–	4/- रोपेया
सालाना	–	20/- रोपेया
सदस्यता	–	5/- रोपेया

हीरा प्रसाद ठाकुर के भोजपुरी जगत में नया तहलका
"हीरा सतसई" कीमत - 55/-रोपेया
छपे के साल -सन् 2002 ई0, कुल्हि पृ0-80

छपी पुस्तक/बुक पोस्ट

नियम - 121

सेवा में

प्रेषक :

डॉ0 दिनेश प्रसाद शर्मा
अध्यक्ष - भोजपुरी अनुसंधान संस्थान,
मुहल्ला+डाकघर - अनाईठ (आरा)
(प्रसाद पेपर वर्क्स के निकट)
जिला - भोजपुर (बिहार) 802301